ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक–
वेद, यज्ञ–योग–साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जुलाई 2024

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

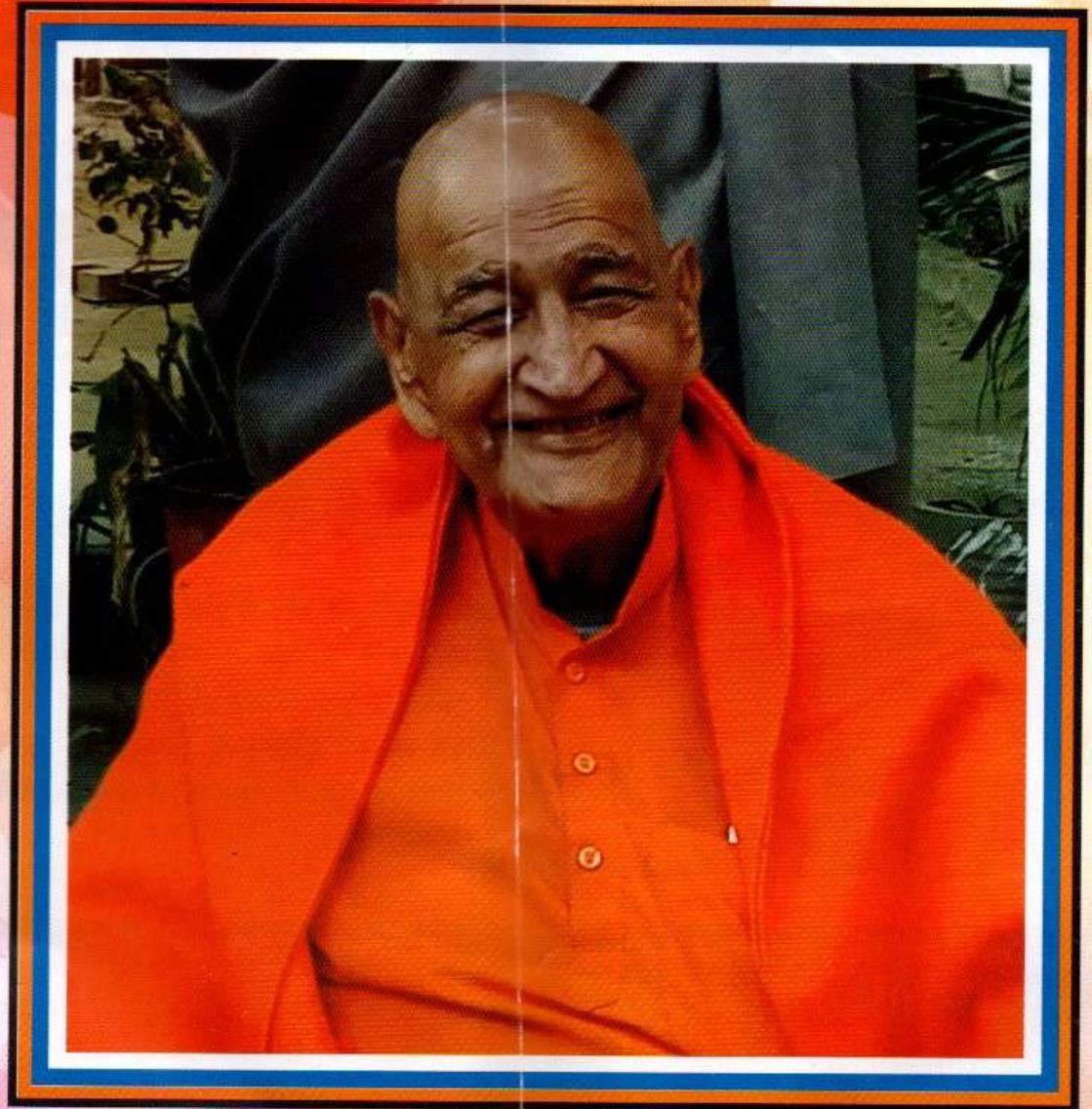

स्व. स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी का स्मृति शेष

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज

कै. महेन्द्र सिंह पंवार का 88वां जन्म दिवस धूमधाम से मनाया

पिछले 10 वर्षों से आश्रम में रह रहे कै. महेन्द्र सिंह पंवार अमेरिका वाले का 88वां जन्म दिवस सभी आश्रमवासियों ने धूमधाम से मनाया। सर्वप्रथम आचार्य विक्रमदेव जी नैष्टिक ने बृहद् यज्ञ कराया और परमात्मा से उनके दीर्घ आयु व स्वस्थ बने रहने की प्रार्थना की। इस अवसर पर श्री स्वामी रामानन्द जी, श्री रामदेव जी, बहन, प्रोमिला शर्मा, पाचक सुखपाल, ब्र. कर्ण आर्य, ब्र. विवेकानन्द ने भजन आदि का कार्यक्रम रखा। परिवार से इनके छोटे भाई सुबेदार दिलावर व अन्य सदस्य भी शुभकामनाएं देने पहुंचे। ट्रस्ट के मन्त्री श्री राजवीर आर्य द्वारा कै. साहब द्वारा आश्रम को

आर्थिक सहयोग देने पर धन्यवाद प्रकट किया। कै. साहब ने भी एक भजन सुनाया और सभी बच्चों को पुरस्कृत किया। आचार्य जी व स्वामी रामानन्द जी को भी दक्षिणा से सम्मानित किया। भोजन की व्यवस्था भी कै. साहब की तरफ से की गई थी।

– **व्यवस्थापक**

प्रिय बन्धुओं! मास जुलाई में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अगस्त अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा भेजें अथवा सम्पर्क करके खाता नम्बर लेकर सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

आषाढ़-श्रावण सम्वत् 2081 जुलाई 2024

सृष्टि सं. 1960853125 दयानन्दाब्द 200

वर्ष-23) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी

(वर्ष 54 अंक 07)

सम्पादक: आचार्य विक्रम देव
(मो. 9896578062, 7988671343)

❖

प्रधान सम्पादक:
श्री राजवीर छिक्कारा (मो. 9811778655)

❖

सह सम्पादक: डॉ. रवि शास्त्री

❖

परामर्श दाता: सत्यानन्द आर्य,
कन्हैयालाल आर्य, सत्यपाल वत्सार्य

❖

व्यवस्थापक:
आचार्य अमृत आर्य

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रूपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507
चलभाष: 9416054195
E-mail : atamsudhi@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
पूर्ण व्यक्तित्व	5
मुन्डे मुन्डे मतिभिन्ना: तुण्डे तुण्डे सरस्वती	6
वेद के प्रादुर्भाव की कहानी-8	8
वेदों का अपौरुषेयत्व	10
मानव जीवन की सफलता के सूत्र	13
पति पत्नी का समझौता कैसे हो?	16
आश्रम परिसर में योग दिवस की सुन्दर झलकियां	17
स्व. स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की पुण्य स्मृति में प्रेरणा दिवस की सुन्दर झलकियां	19
मोटापा घटाएं रोगों पर विजय पाएँ	25
स्वास्थ्य चर्चा	26
बच्चों का भविष्य एवं उनकी समस्याएँ	27
अकाल मृत्यु तथा भूत-प्रेत योनि की विवेचना	30
रक्षा बन्धन का शास्त्रीय स्वरूप: श्रावणी उपाकर्म	32
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

स्व. स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की पुण्य स्मृति में प्रेरणा दिवस मनाया गया

जैसा कि विदित है कि स्वामी जी महाराज का 21 जून 2020 को देहावसान हो गया था। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 23 जून 2024 को सैकड़ों आर्य समाजियों की उपस्थिति में प्रेरणा दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम आचार्य भद्रकाम वर्णी के ब्रह्मत्व व आचार्य विक्रमदेव जी के सानिध्य में ब्रहद् यज्ञ का आयोजन हुआ। तद्पश्चात् स्वामी जी का प्रेरणा दिवस शुभारम्भ हुआ। आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा रोनक व ध्रुव की टीमों ने मंगलाचरण गीत गाया। यज्ञ के ब्रह्मा ने अपने उद्बोधन में कहां कि स्व. स्वामी धर्ममुनि जी से उनका लगभग 30 वर्षों से परिचय था व सन्त पुरुष थे। अध्यक्षता कर रहे ट्रस्ट के प्रधान कन्हैयालाल जी आर्य ने कहा कि मेरे जीवन में स्वामी जी का बड़ा प्रभाव रहा है वे मेरे प्रेरणा स्रोत थे। वैदिक विद्वान् पं. देवशर्मा ने भी श्रद्धेय स्वामी धर्ममुनि जी के जीवन पर प्रकाश डाला। ट्रस्ट कोषाध्यक्ष अशोक जून जी ने स्वामी जी को गुणों का भंडार बताया, पं. जयभगवान जी, स्वामी रामानन्द जी, राजेश राठी जी, हरिओम दलाल जी, शिव स्वामी जी, जयपाल दहिया जी, गोपाल विद्यार्थी जी ने स्वामी जी के प्रति सच्ची, श्रद्धांजलि समर्पित करके उनको स्मरण किया। रामदेव आर्य, व आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक सतीश सुमन जी ने मधुर भजनों का कार्यक्रम रखा। कै. महेन्द्र सिंह जी प्रमुख यज्ञमान बने। अन्त में सभी महानुभावों का आचार्य विक्रम देव जी ने धन्यवाद किया और स्वामी जी के जीवन पर भी प्रकाश डाला। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आचार्य अमृत शास्त्री जी ने व्यवस्था को अच्छी तरह से सम्भाला। समाचार की झलकियां पृष्ठ 19 से 24 तक। **-राजवीर आर्य छिक्कारा**

सुविचार

- मनुष्य अपने गुणों से आगे बढ़ता है, न कि दूसरों की कृपा से।
- अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।
- बुराई कैसी भी हो उसका अन्तिम संस्कार अच्छाई ही करती है।
- किसी को कभी दु:ख मत देना क्योंकि दी गई चीज एक दिन हजार गुना होकर लौटती है।
- हंसता हुआ चेहरा आपकी शान बड़ाता है मगर हंसकर किया हुआ कार्य आपकी पहचान बड़ाता है।
- शब्दों की मार थप्पड़ से ज्यादा चोट करती है अत: बोलते समय पूरा विवेक रखें।
- पेट में गया जहर सिर्फ एक व्यक्ति को मारता है और कान में गया जहर सैकड़ों रिश्तों को मारता है।

- सुदेश सन्दूजा, सैक्टर-9 ए, बहादुरगढ़

आश्रम परिसर में योग दिवस मनाया गया

आश्रम परिसर में आचार्य विक्रमदेव जी के मार्ग दर्शन में आचार्य अमृत शास्त्री द्वारा तैयार किये गए आश्रम के विद्यार्थियों ने भव्य योग प्रदर्शन किया। सुर्यनमस्कार आदि आसन्नों में आश्रम में रह रहे वृद्धों ने भी भाग लिया। योग दिवस का कार्यक्रम बड़ा सराहनीय रहा और प्रबन्धन द्वारा भी इसको उत्तम बताया। समाचार की झलकियां पृष्ठ 17-18 पर। -सम्पादक

पूर्ण व्यक्तित्व

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मयि त्यद् इन्द्रियं बृहन्, मयि दक्षो मयि क्रतुः। धर्मस् त्रि-शुग् वि राजति, वि-राजा ज्योतिषा सह ब्रह्मणा तेजसा सह। -य. 38.27

(वि राजति) विराज रहा है, जगमगा रहा है (मयि त्यत् बृहद् इन्द्रियम्) मुझमें वह महान् इन्द्रिय, (मयि दक्षः) मुझमें दक्षता (कर्मकुशलता), (मयि क्रतुः) मुझमें क्रतु, (मयि त्रि-शुक् धर्मः) मुझमें त्रि-कान्त धर्म। (मैं हूं) (वि-राजा ज्योतिषा सह) वि-राट् ज्योति से सहित। (मैं हूं) (ब्रह्मणा तेजसा सह) ब्राह्म तेज से युक्त।

इस मन्त्र में पूर्ण व्यक्तित्व की आत्मोक्ति है। आत्मोक्ति के मिष से वेदमाता शिक्षा कर रही है कि मन्त्रोक्त छह क्षमताओं से युक्त व्यक्तित्व ही पूर्ण व्यक्तित्व है ।

1. इन्द्रिय शब्द का प्रयोग यहां इन्द्रियाचार अथवा चरित्र के लिए हुआ है। यथा इन्द्रियाचार तथा चरित्र और यथा चरित्र तथा इन्द्रियाचार। व्यक्ति का महान् चरित्र ही है जो उसके व्यक्तित्व को महान बनाता है। महान् वास्तव में वही है जिसका चरित्र महान् है। निर्धन हो वा सधन, विद्वान् हो वा अविद्वान्, राजा हो वा रंक, चरित्र की महानता से जो युक्त है वही महान् है और चरित्र की महानता जो वियुक्त है वह क्षुद्र है। 'इन्द्रिय' नाम बल और ऐश्वर्य का भी है। निस्सन्देह, महान् चरित्र से बढ़कर कोई ऐश्वर्य नहीं है, और चरित्रबल से बढ़कर अन्य कोई बल नहीं है। चरित्र का बल सेनाओं के बल से बलवत्तर है।

2. पूर्ण व्यक्तित्व की दूसरी क्षमता है दाक्षिण्य, दक्षता, कर्मकुशलता। पूर्ण व्यक्तित्व से सम्पन्न व्यक्ति जहां प्रत्येक कार्य कुशलता के साथ करता है, वहां वह अपनी कर्मकुशलता से कठिन से कठिन कार्य को सहजतया कर लेता है, अपनी दक्षता से असम्भव को सम्भव बना देता है और विफलताओं को सफलताओं में, तथा पराजयों को जयों में परिणत कर देता है।

3. ऋतु शब्द में कृ (डुकृञ्) (करणे) धातु का संस्कार है। वैदिक वाङ्मय में यद्यपि ऋतु शब्द का अर्थ क्रतु और प्रज्ञा दोनों हैं, तथापि मूलतः इस शब्द का अर्थ कर्तृत्व ही है। एक ही शब्द के ये दो अर्थ एक दूसरे के पूरक हैं। कर्तृत्व के बिना वक्तृत्व और ज्ञातृत्व बेकार ही होते हैं। पूर्ण व्यक्तित्व से सम्पन्न व्यक्ति के ज्ञान और कथन का उपयोग कर्तृत्व के लिए होता है। वह ज्ञान किस काम का और वह वाणी किस काम की जो कर्तृत्व से निष्पन्न न हो? ज्ञातृत्व और वक्तृत्व के साथ कर्तृत्व का संयोग न होना भारी व्यक्तित्वहीनता है।

4. घर्म का अर्थ है गर्माहट (**वार्मथ**)। 'त्रि-कान्त घर्म' नाम उस गर्माहट का है जो तीन को कान्त बनाता है, तीन को कान्तियुक्त करता है। कौन हैं तीन? समाज, राष्ट्र और विश्व। अपने आपको तथा अपने परिवार को प्रकान्त सुखी और सम्पन्न, बनाने की ऊष्मा तो पशु-पक्षियों में भी होती है। जो मानव अपने और अपने परिवार के ही भरण, पोषण और सजाने में लगे रहते हैं उनका व्यक्तित्व भी कोई व्यक्तित्व है? व्यक्तित्व, पूर्ण व्यक्तित्व वे ही हैं जिनके हृदय में समाज, राष्ट्र और विश्व को सर्वतः कान्तियुक्त करने की गर्माहट होती है।

5. विवेक ही वह वि-राट् ज्योति है जिसमें अज्ञान और अन्धकार का, भ्रम और भ्रान्ति का, विकार और वासना का, विषय और भोग का लेश भी शेष नहीं रहता है। नहि विवेकेन सदृशं ज्योतिट् इह वर्तते, विवेक समान अन्य कोई ज्योति नहीं है। नेत्रसहित होने पर भी विवेकहीन व्यक्ति अन्धा है। नेत्रहीन होने पर भी विवेकी व्यक्ति द्रष्टा है। पूर्ण व्यक्तित्व से निष्पन्न व्यक्ति विवेक की विराट् ज्योति से ज्योतिष्मान् होता है।

6. पूर्ण व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति सदा ब्रह्मलीन रहता है। ब्रह्मलीनता उसे ब्राह्म गुणों के तेज से उसी प्रकार युक्त रखती है जिस प्रकार अग्निलीनता कोयले को आग्नेय गुणों के तेज से युक्त रखती है। ब्राह्म गुणों से युक्त व्यक्तित्व नितान्त निर्मल और निर्विकार रहता है।

सम्पादकीय मुन्डे मुन्डे मतिभिन्नाः तुण्डे तुण्डे सरस्वती

आज के युग मे यह कहावत बड़ी सटीक है कि अपनी-2 ढपली और अपना-2 राग। पिछला मई का पूरा महिना चुनाव के शोर से लबालब रहा। भ्रष्ट से भ्रष्ट व्यक्ति भी अपने को कट्टर ईमानदार बता रहा था। एक दुसरे पर ऐसे तीखे बाण व तंज कसे जा रहे थे जैसे की साक्षात् महाभारत का युद्ध हो रहा हो। कोई कहता की हम 400 पार कर रहे है तो दुसरे कहते थे 200 पर ही सिमट रहे है। हिन्दुओं के आस्था वाले नवरात्रों के दिन हेलिकोपटर में मच्छी खाने का विडियो स्वयं बनाकर मुस्लिम समुदाय को खुश करके सनातन धर्म को मानने वालों को मिर्ची लगा रहा था। कोई कह रहा था कि अगर मोदी फिर आया तो देश को बेच देगा, संविधान बदल कर लोकतंत्र को खत्म कर देगा।

बंगाल की ब्यानबाजियों से तो प्रत्येक भारतीय का मन अवसाद को प्राप्त हो रहा था। यह तो थोड़ा सा नेता लोगों के विषय में लिखा। अब बारी आई 140 करोड़ देशवासियों की। कोई कहता फलां पार्टी की जीत होगी कोई कहता मोदी हार रहा है। अपनी-2 राय व्यक्त करना अपना-2 मत रखना और इसके साथ ही अपनी बात ही सही मानना हमारे अन्दर एक बिमारी घर कर गई है। हल्दी की गांठ मिली की पंसारी बन बैठे। हम पंसारी तब से ज्यादा बन गये है तब से सोशल मिडिया और स्मार्टफोन का प्रचलन बढ़ा है। यह भी श्लोक प्रसिद्ध है की जैसा हम देखते व सुनते है वैसा ही चिन्तन व मनन करने लगते है। अब सारा का सारा दिन स्मार्टफोन पर ऊंगली का रहना और कुछ के हाथ में टी.वी. का रिमोर्ट रहना हमारे तथा बच्चों के लिये शुभ संकेत नही है। इनसे घर भी बिखर रहे है। सारा का सारा दिन बिना प्रयोजन स्मार्टफोन पर बात करने के दुष्परिणाम आ रहे है भविष्य में और भी भयावह स्थिति जान पड़ती है।

अब हमारे सामने प्रश्न आता है की हम किस मत को माने कैसा बोलें और किस पथ के राही हो। हजारों मत है इनमें मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैनी, बुद्ध व पारसी इत्यादि अलग-2 मत रखते है। इस विषय मे हमें महर्षि दयानन्द की बात बड़ी प्रभावित करती है 'कि जो-जो सब मतों मे सत्य बातें है वे सब अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके, जो-जो सब मतमतान्तरों में मित्था बातें हैं उन-उनका खण्डन किया है'। आदि सृष्टि में जब परमात्मा ने इसे रचा तो चार पवित्र आत्माओं के हृदय में वेदों का ज्ञान प्रदान कर दिया उसी सत्य ज्ञान के आधार पर महाभारत युद्ध के समय तक मनुष्य वेदों को अपना संविधान मान के चलता रहा। ऋषि व मुनि लोग अकुंश का कार्य करके राज्य कार्य में सहायता करते थे जिससे राजा लोगों को राजधर्म का पालन करने मे बड़ा सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त होता था। धीरे-2 धर्म का लोप व अधर्म का साम्राज्य हावी हो गया। एक संवैधानिक शब्द है अपने विचार की अभिव्यक्ति जिसका दुरपयोग होकर कोई भी व्यक्ति कुछ भी बोल उठता है, कोई भी महन्त बन बैठता है और अपने अधकचरे ज्ञान को स्वार्थ रूपी कटोरे मे भर कर अमृत बता कर बांटता है। वाममार्गियों की तो कथा ही क्या है वे ना ईश्वर को मानते है ना

धर्म को। उनका मत जारी हैं कि वर्तमान में ही रहकर सुख भोगों। प्रारब्ध जैसा शब्द उनके शब्दकोष मे नही है। अब प्रश्न उठता है कि कौन सा मत किस बात को माना जाएं। इस विषय में हमारा विचार है कि वेदोक्त मत को माना जाएं क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है इसलिये सत्य के ग्रहण और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वेदों का ज्ञान संस्कृत में है इसलिये वेदों का भाष्य कोई महाविद्वान् ही कर सकता है। रावण, सायण, महीधर के भाष्य गल्त और अप्रमाणिक होने के कारण स्वीकार्य नहीं है। धन्य हो देव दयानन्द जिसने कई बार कहा और लिखा ना ही मेरा कोई नया मत चलाने का अभिप्राय है और ना ही मेरा स्वयं का कोई विचार है। मैं तो उस ज्ञान की बात कर रहा हूँ जो ईश्वरिय है।

महर्षि कहते थे कि यदि सब मतों के विद्वान् पक्षपात छोड़कर सत्य सिद्धांत को स्वीकार करे, जो-जो बात सबके अनुकूल है और सबमें सत्य है उनको ग्रहण करके और जो बातें एक-दूसरे से विरुद्ध पाई जाती है, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्ते और वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित हो जाए। विद्वानों के विरोध से ही अविद्वानों में विरोध बढ़कर विविध दु:खों की वृद्धि और सुखों की हानि होती है। स्वामी जी की निराभिमानीता व दुरदृष्टि का एक प्रसंग देकर अपने सम्पादकीय को विराम देते है। लाहौर के साधारण अधिवेशन में शरद जी ने प्रस्ताव किया कि आर्यसमाज के संस्थापक को पदवी से विभूषित किया जाएं। इस पर स्वामी जी ने कहा मैंने नया पंथ चलाकर गुरुगद्दी का मठ नही बनाया है। परम साहयक नियत किये जाने की बात पर वे बोले परम साहयक तो वह जगदीश्वर ही है।

अगर सारा विश्व देवदयानन्द की बात मान ले तो वह दिन दूर नही जब सारे विश्व का कल्याण हो जाए। मनुष्य की एक ही जाति है। वर्ण व्यवस्था अलग-2 है और वो भी कर्म के आधार पर ना की जन्म के आधार पर। अलग-2 मत बनाना अलग सम्प्रदाय व विचार ठीक नही जबकी वेद वाणी की कसौटी हमारे पास है।

- राजबीर छिक्कारा आर्य
मो. 9811778655

गायत्री महिमा धूप, अगरबत्ती एवं हवन सामग्री
ऋतु अनुकूल

विशिष्ट	40.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	50.00	रु. प्रति किलो
विशेष	60.00	रु. प्रति किलो
डोलक्स	80.00	रु. प्रति किलो
स्वोत्तम	140.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	320.00	रु. प्रति किलो

ओ३म ध्वज भाव इस प्रकार है
21/- ओ३म ध्वज (साइज 16X22)
42/- ओ३म ध्वज (साइज 22X34)
53/- ओ३म ध्वज (साइज 34X44)
42/- गायत्री मंत्र पटका

हवन कुंड भाव इस प्रकार है
450/- हवनकुंड 9'' स्टैड के साथ (आयरन)
560/- हवनकुंड 12'' स्टैड के साथ (आयरन)

लाजपतराय सामग्री स्टोर
हवन सामग्री धूप एवम् अगरबत्ती, कलावा, रौली, सिंदूर, ज्योत बत्ती, जनेऊ एवं ड्राई कोन धूप, हवन कुण्ड, ओ३म ध्वज, ओ३म पटका, गुगल, लोबान, कपूर, व अर्टिफिशल फ्लावर इत्यादि
ऑफिस - 856, (ब्रांच ऑफिस : 3543), कुतुब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110006
फैक्टरी - 195/3, नंगली, सकरावती, नजफगढ़, दिल्ली -110043
E-mail : gayatrimahima70@yahoo.com

वेद के प्रादुर्भाव की कहानी-8

-भद्रसेन

प्रनूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थयम्। यस्मिन्निद्रो वरुणो मित्रो अर्यमा देव॥ ओकाꣳसि चक्रिरे॥

ऋ.1, 40,5 यजु. 34, 57

शब्दार्थ-**ब्रह्मणस्पतिः**- महान् स्वामी, बड़ों से बड़ों का मालिक **अक्थ्यम्**-प्रशंसनीय, कथनीय **मन्त्रम्**-रहस्य, विचार भरे वेद को **नूनम्**-निश्चित रूप से, स्पष्टता **प्रवदति**-कहता है, देता है। पूर्वकाल में हुए व्यक्तियों के हृदय में प्रेरित करता है। यस्मिन्-जिस (मन्त्र-वेद) में **इन्द्रः** ऐश्वर्य से युक्त, इन्द्र शब्द से अभिहित **वरूणः**- वरणीय तत्व से भरे, वरूण शब्द से स्तुत्य **मित्रः**- स्नेह सम्पन्न, मित्र नाम से नामित **अर्यमा**- स्वामीभाव से भरे, न्याय कार्य साधक, अर्यमा संज्ञा से संकेतित **देवाः**- दिव्यगुणयुक्त, विविध वस्तुजात को देने वाले, प्रकाश से पूर्ण ये विशिष्ट **ओकांसि**-घर, आवास, स्थल, शरण, टिकाव, केन्द्र बनाकर सारी गतिविधि चक्रिरे करते हैं।

व्याख्या-**ब्रह्मणस्पति**- वेद में अनेकत्र विभक्ति का लोप किए बिना भी समस्त शब्द प्राप्त होते हैं। हमारे चारों ओर भौतिक-अभौतिक रूप में एक से बढ़कर एक रूप में पदार्थ प्राप्त होते हैं। कोई दूसरों से बल, बुद्धि, विद्या, श्रम, कुशलता आदि में महान् हैं। उन सब को अपने नियन्त्रण, व्यवस्था में रखने वाला ही सर्वनियन्ता-सब का स्वामी है। उदाहरण के लिए प्रकाश, आकर्षण-विकर्षण की दृष्टि से सूर्य बहुत ही अधिक महान् है। पर ब्रह्मणस्पति ऐसे सूर्य का भी संचालक, नियामक है अर्थात् यह सारा संसार उस के नियमों में बंधा है। ऐसा सर्वतो महान् प्रभु ही ज्ञान में भी परिपूर्ण, सर्वज्ञ होने से जहाँ हमारे जीवन के लिए अन्य अनेक जीवनोपयोगी जल, वायु आदि पदार्थ देता है। वैसे ही वह एक से एक अनोखे, उपयोगी व्यवहार्य पदार्थों के बर्ताव का ज्ञान भी देता है। क्योंकि ज्ञान के बिना व्यवहार में आने वाली इन चीजों का बर्ताव नहीं हो सकता। वैसे बृह् धातु से ब्रह्म बनता है, जिसका षष्ठी में ब्रह्मणः रूप है।

मन्त्र- मन् और मत्रि धातु से मन्त्र शब्द बनता है। जो कि विचार तथा रहस्य अर्थ में है। इसीलिए आज भी मन्त्री बनते हुए दो प्रतिज्ञाएँ करते हैं। 1. अपने कार्य के विचार योजना की और, 2. अपेक्षित रहस्य, भेद गुप्त रखने की। हमारे साहित्य में वेद के लिए जहाँ मन्त्र शब्द आया है, वहाँ उसकी इकाई को भी मन्त्र कहते हैं। क्योंकि उनमें विचार भरी, रहस्य पूर्ण बात की चर्चा होती है। इस प्रकार विशेष शब्दों के समूह को मन्त्र कहते हैं। जो कि गायत्री, अनुष्टुप् आदि अनेक छन्दों, पद्यों में होते हैं। मन्त्र शब्द इसके साथ अपने शब्दों से कहे गए अर्थ, भाव, बात, वस्तु की ओर भी संकेत करता है। यहाँ स्पष्ट रूप से मन्त्र शब्द वेद के अर्थ में है। तभी तो **यस्मिन्निद्रो वरूणो**-की संगति चरितार्थ होती है। अर्थात् वेद में इन्द्र, वरूण आदि देव नामों से विविध विषयों का विवेचन किया गया है।

उक्थ्यम्- यह मन्त्र शब्द का विशेषण है। इससे दो बातें सामने आती हैं। यह ज्ञान अपने आप में और अपने वर्णन से प्रशंसनीय है। इसमें परमात्मा का स्वरूप, प्रभु के आनन्द से सम्बद्ध बातें जहाँ हैं, वहाँ जीव तथा जगत् से जुड़ी बातें भी यथा स्थान आई हैं। ऐसे ही जीव के जीवन को, जीवन्त बनाने वाली बातें

कथनीय रूप से वेद में हैं। जिन को यहाँ कर्त्तव्य नाम दिया जा सकता है जैसे कि पारस्परिक सम्बन्धों के निर्वहन की चर्चा इसके साथ वाहन, सैन्य रूप में अपेक्षित वस्तु जात। ऐसे ही शिक्षा, चिकित्सा जैसे उपयोगी विषय।

प्र नूनं से युक्त **वदति**- यह भाव दे रहा है, कि संसार के प्रारम्भ में आज की तरह ज्ञान की परम्परा न होने से सर्वज्ञ ईश्वर ही इस परम्परा को प्रारम्भ करता है। अतएव वेद को भी प्रथमज कहा है।

इस मन्त्र की दूसरी पंक्ति में वेद के वर्णन की प्रक्रिया का निर्देश किया है। वेद में इन्द्र, मित्र, वरूण आदि शब्दों को आधार बनाकर सारा वर्णन होता हैं। वेद की भाषा में ऐसी स्थिति को देव, देवता शब्द से पुकारा गया है। अतएव वेदों को पढ़ते हुए हम अनुभव करते हैं, कि इन मन्त्रों में इन्द्र, मित्र, वरूण आदि में से किसी को भी आधार बनाकर वर्ण्य विषय का विवेचन किया जा रहा है। ये अग्नि आदि कहीं ईश्वर के निर्देशक हैं, तो कहीं जीव या जगत् के लिए आए हैं। जैसे कि **इन्द्रं मित्रं वरूणमग्निमाहुः**-ऋ. 1,164,46 मन्त्र का एकं सद् विप्रा **बहुधा वदन्ति** चरण इस स्वारस्य को स्पष्ट कर रहा है, कि एक तत्व को अनेक नामों से कहा जाता है। इसी बात की पुष्टि **यो देवानाम् नामधा एक एव**- यजु. 17, 27 करता है। इसीलिए यजुः 32,1 ने **तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद् वायुस्तदु चन्द्रमाः** में और भी अधिक स्पष्ट किया है।

वेद जहां स्वयं एक जगह यह कह रहा है, कि एक तत्व अनेक नामों, शब्दों से संकेतित होता है, वहां दूसरे स्थल पर **अदिदिधौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जीतमदितिर्जनित्वम्॥** ऋ. 1,89,10

मन्त्र से स्पष्ट होता है, कि अदिति शब्द अपनी भूलभावना के आधार पर अनेक अर्थों में भी प्रयुक्त होता है।

देवा ओकांसि- वेद की भाषा, शैली में अग्नि, इन्द्र आदि को देव, देवता कहा जाता है। मन्त्र में इन नामों के साथ देव शब्द का प्रयोग भी किया गया है। यहाँ देव शब्द केन्द्र बनने वाले के लिए आया है जैसे कि भौतिक जगत् में सूर्य केन्द्रीयभूत है। वह लोक-लोकान्तर की अनेकविध गतिविधि का केन्द्र मूलस्रोत है। अन्य पृथिवी आदि सूर्य से ही प्रकाश, ऊर्जा, उष्मा आदि प्राप्त करते हैं। अतः आस्तिकों द्वारा सूर्य देव भी कहलाता है, माना जाता है।

ऐसे ही सम्बन्धों के संसार में **'मातृदेवो भव, पितृ-देवो भव'**, आदि भी प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक परिवार का सदस्य यह अनुभव करता है, कि परिवार की व्यवस्था में जैसे एक माता उत्पादिका (निर्मात्री), पालिका, शिक्षिका, संरक्षिका, आदि कर्तव्य निभाकर सन्तान की दृष्टि से केन्द्र, मूलस्रोत, देव होती है। ऐसे ही वेद अपने वर्णन में अग्नि, इन्द्र आदि देव शब्दों को ओक, ओट, बल, आधार, केन्द्र कह रहा है। जैसे आज की प्रचलित भाषा में स्वीट हाऊस, मैडिकल हाऊस में अनेकविध रोगों से सम्बद्ध औषधियाँ होती हैं। वहाँ की एक दवा कई बार अनेक रोगों में कार्य करती है, तो वहाँ एक-एक रोग की अनेकविध दवाएँ होती हैं। घर किसी के रहने, बैठने, कार्य करने का एक निश्चित स्थल होता है। वहां से किसी का निश्चित परिचय भी प्राप्त होता है। घर से सुरक्षा आदि की तरह बल भरोसा भी प्राप्त होता है।

- 182 शालीमार नगर, होशियारपुर, पंजाब-146001, मो. 09464064398

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा। इच्छुक साधक-साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाषः 9416054195

वेदों का अपौरुषेयत्व

-उत्तरा नेरुर्कर

महर्षि दयानन्द सरस्वती के घनघोर अनुयायी होने पर भी, एक बात को मानने में कठिनता होती है और वह है वेदों का अपौरुषेयत्व। यह संशय स्वाभाविक भी है। हमे प्रकृति को ईश्वरकृत मानने में दुविधा नहीं होती, क्योंकि हम पाते हैं कि उसका एक कण भी बनाना आजतक मनुष्य की बुद्धि के परे है। परन्तु किसी पुस्तक को ईश्वर की रचना कैसे माना जाए? भाषा तो मनुष्य द्वारा बनाई हुई है, तो उस भाषा द्वारा रचना ईश्वर क्योंकर करेगा? सांख्य में इस विषय पर कुछ आश्चर्यजनक हेतु प्रस्तुत किए गए हैं। इस लेख में मैं उनका विवरण दे रही हूँ।

सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि ने स्पष्ट शब्दों में इस मत को रखा है। वहीं से आरम्भ करते हैं। प्रश्न उठता है-'वेद को ईश्वर से होने की आवश्यकता कुछ भी नहीं, क्योंकि मनुष्य लोग क्रमशः ज्ञान बढ़ाते जाकर पश्चात् पुस्तक भी बना लेंगे।' तो महर्षि कहते हैं-''कभी नहीं बना सकते क्योंकि बिना कारण के कार्योत्पत्ति का होना असम्भव है। जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देखकर भी विद्वान् नहीं होते और जब उनको कोई शिक्षक मिल जाए तो विद्वान् हो जाते हैं और अब किसी से पढ़े बिना कोई विद्वान् नहीं होता। इस प्रकार जो परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेदविद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते, तो सब लोग अविद्वान् रह जाते। जैसे किसी के बालक को जन्म से एकान्त देश, अविद्वानों वा पशुओं के संग रख देवें, तो वह जैसा संग है, वैसा ही हो जाएगा। इसका दृष्टान्त जंगली भील आदि हैं।''

मुझ जैसे लोगों को यहाँ आपत्ति हुई कि कई प्रकार का ज्ञान है जिसे मनुष्य ने अपने आप ढूंढ़ निकाला। जैसे बीजगणित (Algebra), रेडियो-एक्तिविटी (Radioactivity), आनुवांशिक-अणु (Gane) आदि। इसमें वेद का कुछ भी हस्तक्षेप नहीं था। मैं अपनी भूल तब जानी जब प्रशान्त महासागर के एक दूरस्थ द्वीप पर रहने वाले कुछ आदिवासियों का जीवन टी.वी. पर देखा। उनका जीवन जंगली जानवरों से कुछ ही बेहतर था। ऋषि से तो वे सब भी बहुत दूर थे। तब समझ में आया कि वेद के उपदेश 'कृषिं कृषस्व' से ही यह परम्परा प्रारम्भ हुई, नहीं तो एक घास से अनाज उत्पन्न करने की कौन सोचेगा? वेद केवल बीज-रूप में बात कहते हैं। मनुष्य में इतना सामर्थ्य है कि वह उतने दिशा-निर्देश से ही उस ज्ञान को मीलों दूर ले जा सके परन्तु बिना प्रारम्भिक ज्ञान के कुछ भी विकास सम्भव नहीं है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में महर्षि ने और भी विस्तार से इस विषय पर चर्चा की है। वह देखने योग्य है।

सांख्यदर्शन में इस विषय को अन्य प्रकार से प्रमाणित किया गया है। शब्द प्रमाण के प्रकरण में, महर्षि कपिल कहते हैं-

वाच्यवाचकभावः सम्बन्धः शब्दार्थयोः॥

सां. 5/37॥

अर्थात् शब्द व अर्थ का सम्बन्ध क्रमशः वाचक और वाच्य का है-अर्थ जो अभिप्रेत हैं, वह वाच्य है और शब्द उसको जनाता है, इसलिए वाचक है। यह सम्बनध हमारे मस्तिष्क में किस प्रकार स्थापित होता है, इस पर वे कहते हैं-

त्रिभिः सम्बन्धसिद्धिः॥ सां. 5/38॥

अनु.-शब्दार्थयोः

तीन प्रकार से शब्द और अर्थ के बीच सम्बन्ध सिद्ध होता है। ये तीन प्रकार क्या हैं, इस पर विभिन्न व्याख्याकारों ने विभिन्न मत प्रस्तुत किए हैं, परन्तु मेरे अनुसार कपिल ने यहाँ इन तीन प्रकारों का और अधिक विवरण इसलिए नहीं दिया है क्योंकि वे पहले दिए जा चुके हैं। वे वही हैं जिनसे ज्ञान-प्राप्ति बताई गई है- प्रत्यक्ष, अनुमान व शब्द प्रमाण। वह इस प्रकार-

1. **प्रत्यक्ष**- जब माँ अपने शिशु को कहती है, 'देख बेटी, यह कुत्ता है।' तब वह शिशु की स्मृति में 'कुत्ता' शब्द और उसके अर्थ को स्थापित करती है।

2. **अनुमान**- जब पिता शिशु को कहता है, 'देख बेटा, इन दो सेबों और इन दो सन्तरों में जो वस्तु

बराबर है, वह है गिनती दो।' तब वह पिता अनुमान से 'दो' शब्द और अर्थ में सम्बन्ध स्थापित करता है।

3. शब्द- शब्द से ही शब्द सीखे जाएं, इसमें तो अन्योऽन्याश्रय दोष प्रतीत होता है। परन्तु वास्तव में हम अधिकतर ज्ञान शब्दों से ही प्राप्त करते हैं। मनुष्यों को जानवरों से इसी के कारण तो अधिक ज्ञान होता है। इसका उदाहरण है जब गुरु शिष्य से कहता है। "जिससे सत्य ज्ञान हो, उसे प्रमाण कहते हैं।" तब वह प्रमाण शब्द का ग्रहण करवाता है। इस प्रकार छोटे-छोटे शब्दों को प्रथम दो प्रकार से सीख कर, हम बहुत कठिन शब्द तीसरे प्रकार से सीखते हैं और अतीन्द्रिय ज्ञान भी शब्द द्वारा प्राप्त कर लेते हैं। अब वेद की विलक्षणता को दर्शाते हुए कपिल कहते हैं.

न त्रिभिरपौरुषेयत्वाद्वेदस्य
तदर्थस्याप्यतीन्द्रिय- त्वात्॥

सा. 5/41॥ अनु.- वेदार्थप्रतीतिः

अर्थात् वेदों के शब्द-अर्थ-सम्बन्ध तीनों ही उपर्युक्त प्रकारों से नहीं होते, क्योंकि वेद अपौरुषेय हैं और उनके अर्थ (प्रायः) इन्द्रियों से परे हैं। क्योंकि वेदों को मनुष्यों ने नहीं बनाया है, इसलिए उनके शब्दार्थ मनुष्य को कौन बताएगा? सो प्रारम्भिक अत्यन्त पवित्र ऋषियों की बुद्धियों में इन अर्थों को परमात्मा स्वाभाविक रूप से प्रकाशित करते हैं। ऊपर के तीनों ही प्रकारों में मनुष्य का हस्तक्षेप है (उदाहरणों में माता, पिता व गुरु का)। इसलिए सृष्टयारम्भ में उन पवित्रत्माओं को चुना गया जिन में, बिना किसी शब्दज्ञान के भी, वह ज्ञान आरोपित किया जा सके। वह शक्ति वेदों के शब्दों में ही उपलब्ध है।

अब दूसरा हेतु देखिए- अतीन्द्रियत्व। जैसे हमने ऊपर देखा, यह गुण तो मानुषिक शब्द में भी प्राप्त होता है- मनुष्य के शब्द भी अतीन्द्रिय वस्तुओं का वर्णन करते हैं। सो, यह हेतु वस्तुतः वेदों के अपौरुषेयत्व के लिए है-वेद अपौरुषेय हैं क्योंकि उनके विषय अतीन्द्रिय हैं। मनुष्य-सृष्टि के आरम्भ में जब वेदों का प्रादुर्भाव हुआ, तब अतीन्द्रिय विषय मनुष्य के ग्रहण के परे थे। इसलिए उनको किसी ग्रन्थ में निबद्ध करना किसी भी मानव के सामर्थ्य के बाहर था। इसलिए वेदों को परमात्मा की कृति मानने के लिए हमें बाध्य होना पड़ता है।

आगे कपिल कहते हैं-

न यज्ञादेः स्वरूपतो धर्मत्वं वैशिष्टययात्॥

सां. 5।42॥ अनु.-अपौरुषेयत्वाद्वेदस्य तदर्थस्याप्य तीन्द्रियत्वात्

अर्थात् वेदों का अपौरुषेयत्व और उनके अर्थों का अतीन्द्रिय होना इससे प्रमाणित होता है कि यज्ञादि अनेक धार्मिक कृत्यों का स्वरूप से धर्मत्व नहीं है, क्योंकि उन कर्मों में विशेषता है।

यदि हम यज्ञ को ही देखें तो लगता है कि-पौष्टिक वस्तुओं को व्यर्थ ही अग्नि में भस्म किया जा रहा है। यज्ञ की प्रक्रिया में क्या विशेषता है, कैसे वह पर्यावरण के लिए लाभकारी है, इसका विज्ञान अभी तक खुलासा नहीं कर पाया है। इसका अर्थ यह हुआ कि वेदों में जिसे धर्म कहा गया है, वह सर्वदा मनुष्य की बुद्धयानुसार नहीं है। परन्तु उसके कल्याणकारी फलों को हम कभी-कभी देख पाते हैं। तब हमें मानना पड़ता है कि मनुष्य-बुद्धि ने उस धर्म के कथन का सृजन नहीं किया हो सकता।

आगे कपिल अ ैर भी स्पष्टतः कहते हैं-

न पौरुषेयत्वं तत्कर्तुः पुरुषस्याभावात्॥

सां. 5/46॥ अनु.- वेदानाम्

वेद पौरुषेय नहीं हैं क्योंकि उनके करने वाले पुरुष का अभाव है।

वेदों का उल्लेख प्राचीनतम ग्रन्थों तक में उपलब्ध है परन्तु किसी ने उनको किसी व्यक्ति-विशेष की कृति नहीं बताया है। जो महर्षि व्यास के नाम से यह प्रसिद्ध है कि उन्होंने वेद-मन्त्रों का चार संहिताओं में संयोजन किया, तो वह अतिशयोक्ति भी केवल मन्त्रों के क्रम उलट-पुलट करने के लिए है (सम्भवतः अपने गुरु की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उनके शिष्यों द्वारा ऐसा कहा गया)। वहाँ भी यह नहीं कहा गया कि व्यास ने वेदों की रचना की। यही नहीं-

न मुक्तामुक्तयोरयोग्यत्वात्॥

सां. 5/47॥ अनु.-वेदानां, तत्कर्तुः

कपिल कहते हैं कि वेदों को रचने का सामर्थ्य न तो अमुक्तात्माओं (प्रधानतः मनुष्यों) में है और न मुक्तात्माओं में ही है।

यहाँ कपिल इंगित कर रहे हैं कि जिन्होंने वेद

स्वयं समझे नहीं, उनका यह कहना कि वेद मनुष्य-कृति है, वृथा प्रलाप है क्योंकि उन्होंने वह अमृत चखा ही कहाँ है? जो वे कुछ भी उसके विषय में बता सकें। बातों के महल तो कोई भी खड़े कर सकता है। दूसरी ओर, जिसने भी वेदों का रसपान किया है, उसे तुरन्त ज्ञात हो जाता है कि यह अल्पज्ञ जीवात्मा की कृति हो ही नहीं सकते। इस प्रकार एक छोटे-से वाक्य में कपिल क्या कुछ कह गए!

जिज्ञासुओं के लिए वे इस बात को और अधिक स्पष्ट करते हैं-

यस्मिन्नदृष्टेऽपि कृतबुद्धिरुपजायते तत् पौरुषेयम्। सां. 5/50।। अनु.- तत्कर्तुः

जैसे 'पौरुषेय' की परिभाषा देते हुए कपिल कहते हैं- जिसमें कर्त्ता के न दिखने पर भी, ऐसा स्पष्ट ज्ञान होता है कि इस वस्तु को बनाया गया है, वह पौरुषेय=पुरुष/मानव-निर्मित होती है।

यह तो सामान्य अनुभव है कि कौन-सी वस्तु मनुष्य ने बनाई है, वह हम सरलता से जान लेते हैं। दूसरी ओर प्राकृतिक वस्तुओं में हमें एक स्वाभाविकता की प्रतीती होती है, जिससे भी हम जान जाते हैं कि यह पदार्थ मानव का बनाया नहीं है। यदि इस विषय पर हम गहन विचार करें, तो हमें समझ में आएगा कि यह प्रतीति इसलिए होती है कि प्राकृतिक वस्तुएँ खुलती चली जाती हैं। जैसे कोई ऐसा घर हो जहाँ हम द्वार खोलते जाएँ परन्तु प्रकोष्ठों का अन्त ही न हो। उदाहरण के लिए, यदि हम एक सुन्दर कृत्रिम फूल को देखते हैं तो कपड़ा, प्लास्टिक आदि की बनावट की प्रशंसा करने के पश्चात्, फूल में कुछ भी देखने को नहीं बचता। अब एक प्राकृतिक फूल उठाइये। बाहरी सुन्दरता से प्रसन्न होकर, अब उसको खोलिए- उसमें पंखुड़ियाँ, नर व मादा भाग की सुन्दरता को निहारिए। फिर अल्ट्रा वायलैट किरण में इसे देखिए तो ज्ञात होगा कि वहाँ भवरों को दिखने वाला दृश्य कुछ और ही है। फिर नर और मादा भागों को आधे में काटकर, सूक्ष्मदर्शिका (Microscope) में देखिए। वहाँ और एक ब्रह्माण्ड खुल जायेगा। इस प्रकार सूक्ष्म से सूक्ष्मतर देखते-देखते आप परमाणु तक पहुँच सकते हैं और वहाँ पर भी कहानी समाप्त नहीं होती। यह हम जानते ही हैं। इस प्रकार की जब हम क्लिष्ट रचना पाते हैं तो हमें किसी के समझाने की आवश्यकता नहीं होती कि यह परमात्मा की कृति है, मनुष्य की नहीं। मनुष्य की क्लिष्टातिक्लिष्ट रचना भी छोटी से छोटी प्राकृतिक वस्तु के सामने पानी भरती है।

कपिल इस सूत्र में इसी ओर ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। जब हम वेद पढ़ते हैं तो देखते हैं कि उनमें जैसे अर्थों की सीमा ही नहीं होती। प्रत्युत विभक्ति आदि व्यत्यय जो वेदों में पाए जाते हैं (और जो प्रारम्भिक छात्र को बहुत ही त्रस्त करते हैं!) वे इसलिए भी होते हैं- प्रधान विभक्ति से आप प्रधान अर्थ का ग्रहण कर लीजिए, फिर विभक्त्यादि-व्यत्ययों द्वारा अन्य अर्थ प्राप्त कर लीजिए। वेदों को समझना इतना कठिन इसीलिए है कि उनका अर्थ जानने के लिए बहुत कुछ (षडंग आदि) पहले ही जानना पड़ता है। तदुपरान्त मन्त्र के ऋषि, देवता, छन्द, स्वर, प्रकरण, आदि, अंश देखकर एक-एक मन्त्र का अर्थ-निर्धारण करना पड़ता है। एक-एक वेदांग पर अधिकार प्राप्त करने के लिए लोग अपना पूर्ण जीवन व्यतीत कर देते हैं। सभी अंशों को समझ लेना तो मनुष्य को ऋषि की श्रेणी में ला खड़ा करता है। साधारण मनुष्यों के लिए रचना तो क्या, समझना ही प्रायः असम्भव-सा ही होता है।

वैसे तो महर्षि दयानन्द और कपिल इस सोच में अकेले नहीं थे कि वेद अपौरुषेय हैं- उनके पीछे एक लम्बी परम्परा है। प्राचीन सभी विचारकों ने वेदों को अपौरुषेय माना है। प्रायः सभी दर्शनकारों ने इस भावना को अपने ग्रन्थों में व्यक्त किया है। जिन्होंने वेदमन्त्रों को समझने की चेष्टा की है, उन्हें शनैः-शनैः इस तथ्य का भास होने लगता है, परन्तु जो केवल मन्त्रार्थ पढ़ते हैं उन्हें इस विषय में संशय अधिकतर बना रहता है। कभी-कभी जब हमें अपनी बुद्धि में कुछ स्पष्ट न हो रहा हो तो हमें ऋषियों की वाणी को शब्द प्रमाण मानकर स्वीकार कर लेना चाहिए। इसलिए जब वे कहें कि वेद अपौरुषेय हैं तो उसे हमें स्वीकार कर लेना चाहिए। जैसे-जैसे हम प्रयास करेंगे, यह तथ्य प्रकट होने लगेगा।

मानव जीवन की सफलता के सूत्र

- आचार्य भगवानदेव वेदालंकार

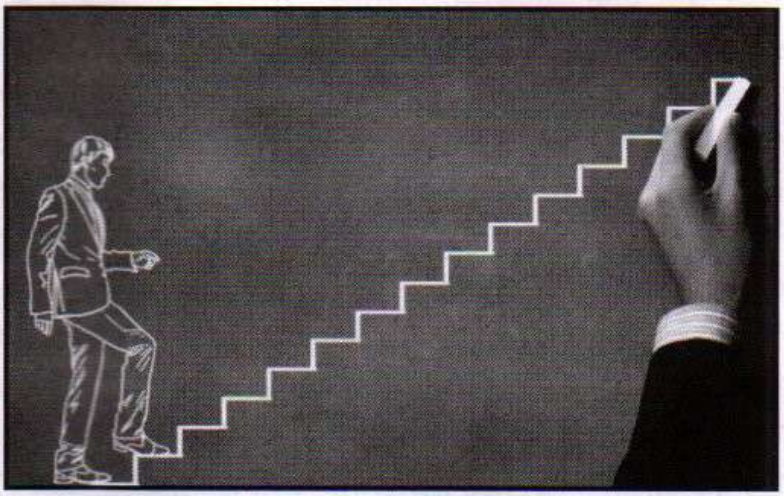

1. मानव जीवन का महत्त्व-संसार में अनेक बहुमूल्य पदार्थ है। उनमें मानव जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है। मानव परमात्मा की सर्वोत्तम रचना है। अनेक जन्मों के पश्चात् दुर्लभ मनुष्य योनि प्राप्त होती है। तुलसीदास जी ने इसकी श्रेष्ठता व महिमा इन शब्दों में कही है-

बड़े भाग मनुष्य तन पावा।
सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थहि गावा।

भाग्यशाली को यह जीवन प्राप्त होता है। आत्मज्ञान एवं आत्मदर्शन इसी में सम्भव है। यही जीवन परमार्थ, धर्मार्थ व पुण्य कर्म करने का आधार है। मनुष्य शरीर में ही भक्ति, पूजा, प्रार्थना, साधना, सेवा, शुभ कार्य आदि हो सकते हैं। इसी जन्म की सफलता के द्वारा जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचा जा सकता है। इस जीवन की प्राप्ति एक स्वर्णिम अवसर हैं ऐसा सुनहरा मौका बार बार नहीं मिलता। किसी कवि का यह कहना उचित ही है-

रात गंवाई सोयकर, दिवस गवायो खाय।
हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥

2. आज के मानव की स्थिति-आम आदमी दुर्लभ मानव जीवन को खाने पीने, सोने और विषय भोगों में ही गुजार देता है। जीवन को सीधा करते करते ही जीवन खत्म हो जाता है। जीवन की सफलता को सफला की तैयारी करते करते ही जीवन निकल जाता है। आज के इन्सान ने जीवन का अर्थ समझा ही नहीं, जीवन को सफल बनाया ही नहीं। फिर भी हम देखते हैं कि जीवन के दो मुख्य पहलू है- एक सफल जीवन और दूसरा निष्फलता का जीवन। कुछ व्यक्ति अपने जीवन में सफल हो जाते हैं किन्तु कुछ व्यक्ति अपने मानवोचित कमजोरी के कारण दूसरे की सफलताओं से दु:खी होते हैं। यों तो सुख और दु:ख मानव जीवन के साथ साथ जुड़े रहते हैं।

3. सफलता के रहस्य और दु:ख का कारण-जहां सफलता है, आत्म सन्तोष है, शान्ति है, खुशी है, प्रसन्नता है, सुख समृद्धि है। वहां सुख है, आनन्द है। जहां निष्फलता है, कमजोरी है, ईर्ष्या है, द्वेष है, असन्तोष है, अभाव है, अन्याय है, अत्याचार है वहीं परेशानी है, दु:ख है, अशान्ति है। मानव में कमजोरी है कि वह जीवन की सफलता के लिए उतना श्रम नहीं करता, जितना उसे करना चाहिए। वह जहां दूसरे व्यक्ति को सफलता की ओर बढ़ता हुआ देखता है, वही वह अपने अन्दर की छिपी हुई कमजोरी ईर्ष्या और द्वेष के कारण दु:खी होने लगता है। वह अपने मन की संकल्प शक्ति को भुला देता है। जल्दी निराशा के वशीभूत हो जाता है। मनुष्य को आशावादी होना चाहिए। निराशावादी नहीं। वेद में कहा है 'तन्मे मन: शिव संकल्पम् अस्तु' अर्थात् हमारा यह मन उत्तम और श्रेष्ठ विचारों वाला हो। कोई हमसे द्वेष न करे और हम भी किसी से द्वेष न करें।

4. सफलता के सूत्र एवं कलायें- इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मानव जीवन विशेष जीवनयापन का एक उत्तम पहलू है। सभी मनुष्य चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हो, युवा अथवा वृद्ध हो कहीं न कहीं रहकर अपनी जीवन यात्रा को

चलाने के लिए कुछ न कुछ करते हैं। किन्तु जीवन को सुखपूर्वक जीने की कला को शायद बहुत कम लोग जानते होंगे। हमारी इस वार्ता के माध्यम से जीवन में निराशा से आशा की ओर, असफलता से सफलता की ओर अग्रसर होने, किसी भी कार्य को शीघ्र और कुशलता से करने के सरल तरीके एवं अनुभूत, उपायों पर प्रकाश डाला जा रहा है। **जैसे- (क) आज का कार्य कल पर न छोड़ें**- प्रतिदिन का कार्य प्रतिदिन निपटा देने से ही जीवन में सफलता मिल सकती है। जिसने भी आज का काम कल पर टाला, समझो वह एक महत्वपूर्ण समय को खो चुका है। हम किसी चीज का मूल्यांकन तब करते हैं जब वह हमारे हाथ से निकल जाती है। माता पिता की कीमत तब पता चलती है जब वे हमसे विदा हो जाते हैं। ऐसे ही जब जीवन खत्म हो जाता हैं तब हमें द्य जीवन की कीमत का पता चलता है। और जीने का ढंग आता है। इसीलिए कहा है कि- काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परले होयगी, बहुरि करेगा कब।।

अर्थात् कल की बातें मत करो। मनुष्य के कल को कौन जानता हैं? कवि के शब्दों में- आगाह अपनी मौत से, कोई वशर नहीं। सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं। अर्थात् जीवन की सफलता के लिए समय का पालन करो। जीवन का एक एक क्षण अमूल्य है। दुनियां में सबसे कीमती चीज समय हैं जो समय को पहचानते और उसकी कीमत करते हैं वे जीवन में आगे बढ़ जाते हैं।

(ख) सफल व्यक्तियों का अनुसरण करें- सफलता सिर्फ एक संयोग नहीं है। एक व्यक्ति एक के बाद एक सफलता हासिल करता चला जाता है जबकि दूसरे लोग सिर्फ तैयारियों में ही लगे रहते हैं। सफलता और असफलता के विषय पर बहुत खोज हुई है। जब हम सफल व्यक्तियों की जीवनियों पर नजर डालते हैं तो पता चलता है कि सभी में निसन्देह मिलते जुलते कुछ खास गुण हैं। सफलता हमेशा अपने निशान छोड़ जाती है और अगर हम इन निशानों को पहचान लें और सफल व्यक्तियों के गुणों को अपने जीवन में अपना लें, तो हम भी सफल हो जाएँगे। फिर हमें दूसरों की सफलता से दु:खी होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। असफलता सही मायनों में कुछ गलतियों को लगातार दोहराने का नतीजा है।

(ग) अपनी कमजोरी को दूर करें:- मनुष्य दूसरों की सफलता से दु:खी क्यों होता है? व्यक्ति में कुछ कमजोरियां बैठ जाती है। जैसे-मिथ्या अहंकार, स्वाभिमान की कभी, सफलता-असफलता का डर, विचारपूर्वक भावी योजना का न होना, अपने मुख्य लक्ष्यों अथवा उद्देश्यों का न होना, समय के अनुसार जिन्दगी में बदलाव न लाना, समय पर कार्य न करना अथवा टालमटोल, निकम्मापन, उचित श्रम न करना, पारिवारिक जिम्मेदारियों का पालन न करना, आर्थिक असुरक्षा, धन की कमी, दिशाहीनता, रूपये पैसों के लालच की वजह से दूर की न सोचना, सारा बोझ खुद उठाना, क्षमता से ज्यादा अपने आपको बांधना, वचनबद्धता का न होना, उचित अनुभव, प्रशिक्षण की कमी का होना, दृढ़ता की कमी, आत्मविश्वास का न होना इत्यादि कमजोरियों के कारण मनुष्य दूसरों की सफलता से दु:खी होता देखा गया है।

5. जीवन की सफलता के तीन तत्व:- यद्यपि जीवन को सफल बनाने के लिए अनेक सहायक तत्वों की आवश्यकता है जैसे शरीर को धारण करने वाला और पालन पोषण करने वाला महत्वपूर्ण तत्व धन है। धन के अभाव में जीवन की गाड़ी चल नहीं सकती। धनोपार्जन मुनष्य का धर्म है। आचार्य चाणक्य के अनुसार 'सुखस्य मूलम् धनम्' धन को सुख का मूल माना गया है। श्री भर्तृहरि ने तो यहां तक घोषणा कर दी थी कि 'धनवान् ही कुलीन है, धन सम्पन्न व्यक्ति ही पण्डित है, विद्वान् है, गुणज्ञ और वक्ता है एवं रूपवान् है' महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने तो यहां तक कह दिया-**'पुरुषाऽधनम् बध:'**

धन का न होना मनुष्य की मृत्यु है। धन जीवन विकास का साधन है, साध्य नहीं। धन से श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण जो जीवन को धारण करता है वह है स्वास्थ्य अर्थात् निरोगिता जीवन में स्वास्थ्य के महत्व को कौन नहीं अनुभव करता। छोटे से छोटा, बडे से बडा, क्या अमीर, क्या गरीब, क्या स्वामी, क्या सेवक, क्या विद्वान्, क्या मूर्ख को रोग का अहसास होने पर स्वास्थ्य के महत्व की अनुभूति होती है किन्तु मनुष्य धन ऐश्वर्य, विद्वता एवं बल आदि के मिथ्या अभिमान के नशे में स्वास्थ्य की अवहेलना करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता। आयुर्वेद के महान् आचार्य महर्षि चरक का कथन है 'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन सबका मूल उत्तम स्वास्थ्य है।

अतएव जहां जीवन में धन का बड़ा महत्व भी नगण्य सा प्रतीत होने लगता है। जिस प्रकार धन जीवन के विकास को कायम रखने के एवं उपभोग के लिए साधन सामग्री जुटाता है। वहीं जीवन विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण एक और तत्व है।

जिसे आचरण या चरित्र कहा जाता है। इसका सीधा सम्बन्ध मन और आत्मा से है। प्राय: देखा गया है कि चरित्र के अभाव में बड़े बड़े धनधारी समय आने पर विनाश के गर्त में गिरकर नरक भोगने लगते हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम आचरण से मानव दु:ख दाई पाप से बचा रहता है और वह जीवन को सफलता की ओर अग्रसर करता है। जीवन में सफलता के लिए जरूरी है- श्रेष्ठता सफलता की राह में कामयाबी हासिल करने के लिए हमें श्रेष्ठता हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। श्रेष्ठ होने की कोशिश करना ही तरक्की है। प्रकाशकवि का यह कथन उचित ही है-

बैठा क्यों हाथ पै हाथ धरे,
मुखड़े पर छायी क्यों घोर उदासी
शक्ति निधान महान है तू
यह जान करा न जहान में हांसी।
अन्तर तेरे प्रवाहित है सुख,
स्त्रोत निरन्तर बारह मासी।
व्याकुल तू फिर भी है प्रकाश,
अचम्भा ये पानी में मीन है प्यासी॥

- 64, विकासनगर फैस-3,
निकट बाला जी मन्दिर, (हस्तसाल
एरिया), नई दिल्ली-56

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 5100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 350000/-आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

पति पत्नी का समझौता कैसे हो?

–गोपालभिक्षु वानप्रस्थ आश्रम गढ़ी ऊधमपुर

पति पत्नी का समझौता तब होता है जब दोनों एक दूसरे की गलती को बरदाश्त करें और माफ करें। अगर आप पति हैं तो सोचिए कि आपकी पत्नी केवल पत्नी ही नहीं है वह घर की सफाई करने वाली भी है, बीमारी में सेवा करने वाली भी है। दु:ख दर्द में हाथ बढ़ाने वाली भी है दोस्त भी है। दिल की बात समझने वाली प्रेमिका भी है। बच्चे को जन्म देने वाली मां भी है और पालने वाली भी है। अगर आप पत्नी हैं तो सोचिए कि आपका पति आजाद है उसे कोई रोकनेवाला नहीं है। उसका अपना घर है अपनी कमाई करता है। वह किसी स्त्री के पास भी जा सकता है। यदि आप भी ऐसा ही करेंगी तो आपको सफलता नहीं मिलेगी। ऐसी हालत में समझौता ही करना पड़ता है और समझौता करने के लिए एक दूसरे की गलती को बरदाश्त करना ही पड़ता है। परिवार को सुखी बनाने के लिए और पति पत्नी में समझौता करने के लिए धन का अधिक होना जरूरी नहीं है। हां प्यार का होना तथा मीठी वाणी का होना जरुरी है। अगर आप दोनों के विचार सुन्दर हैं और आप दोनों को जीने की कला आती है तो आपका परिवार स्वर्ग बन जाता है। पति और पत्नी के गुण कर्म स्वभाव जितने आपस में मिलते होगें उतना ही परिवार में सुख होगा। इसलिए गृहस्थ की गाड़ी गुण कर्म स्वभाव के मेल से चलती हैं। सुन्दरता का अपना स्थान है सुन्दरता से जवानी बेकाबू हो जाती है। परन्तु सुन्दरता हमेशा नहीं रहती। इसके बिना भी गृहस्थ की गाड़ी चल सकती है। बुढ़ापे में सुन्दरता समाप्त हो जाती है। गुण कर्म और स्वभाव से ही गृहस्थ की गाड़ी चलती है। अगर आप दोनों के अन्दर बरदाश्त करने और माफ करने की शक्ति है तो फिर पति और पत्नी के बीच बिगाड़ ज्यादा देर नहीं ठहर सकता।

पति पत्नी का झगड़ा समाप्त– एक बार पत्नी ने अपने पति से कहा कि आप आफिस से आते हो तो अपना हैट और कोट कुर्सी पर ही छोड़ देते हो किल्ली पर नहीं टांग सकते जूता भी अपने स्थान पर नहीं रखते। पति ने कहा कि तुम घरवाली हो यह सब काम तुम्हें ही करने होंगे। पत्नी ने उत्तर दिया सब काम करने हैं तो एक नौकर रख लो मुझ से यह सब काम नहीं होते। आप अपना हैट और कोट अगर किल्ली पर टांग दो तो कोई हर्ज है। पत्नी ने उत्तर दिया अगर तुम टांग दोगी तो कोई हर्ज है। पत्नी ने उत्तर दिया मैं अकेली क्या-क्या करूँ तुम्हारा काम भी करूँ, बच्चों का भी करूँ, घर का भी करूँ। मेरी जगह कोई दूसरी होती तो इस घर को छोड़कर चली जाती। पति ने कहा सच तो यह है कि मैं ही तुम्हारे साथ निभा रहा हूँ कोई और व्यक्ति होता तो तुम्हें कब का छुट्टी मिली होती। पत्नी ने कहा कि तुम मुझे घर से निकालना चाहते हो तुम इतने ही गरीब थे तो मुझसे शादी करके क्यों लाये थे। शादी से पहले तुम कहते थे कि मैं तुम्हारी सब इच्छा पूरी करूंगा मुझे तुम से बहुत प्यार हे अब तुम्हारा प्यार कहाँ चला गया। जरा सी बात पर काटने को आते हो। तुमने मुझे घर से क्या निकालना है मैं खुद ही चली जाती हूँ। पत्नी अपने बेटे मोहन को लेकर मायके चली गई। चार पांच दिन तो ऐसे ही बीत गए और फिर पत्नी को याद आने लगी और महसूस होने लगा कि मेरा भी कसूर था। वह आफिस से परेशान आते थे और कहते थे कि जरा मेरा हैट और कोट किली पर टांग देना परन्तु मैं उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर सकी और उसे रोना आने लगा और माफी मांगने के लिए चिट्ठी लिखने लगी। चिट्ठी में लिखा कि मेरे स्वामी मुझे माफ कर देना मेरा ही कसूर था कि आप जैसे अच्छे पति की मैं कदर न कर सकी। बेटा मोहन उदास है और आपसे मिलना चाहता है। यह चिट्ठी जब पति को मिली तो उसकी आंखों में आंसू आ गये और उसने भी चिट्ठी लिखनी शुरु की और लिखा मेरे दिल की रानी तुम जैसी प्यारी पत्नी की मैं कदर न कर सका मुझे माफ कर देना अब मैं अपने सारे काम खुद ही करूंगा। मुझे तुम्हारी और बेटे मोहन की बड़ी याद आती है अब मेरी चिट्ठी पढ़ते ही घर वापिस आ जाओ। अब पत्नी घर वापिस आ गई और घर की रौनक घर वापिस आ गई और सब झगड़ा समाप्त हो गया। इस छोटी सी घटना ने घर को स्वर्ग बना दिया।

आश्रम परिसर में योग दिवस की सुन्दर झलकियां

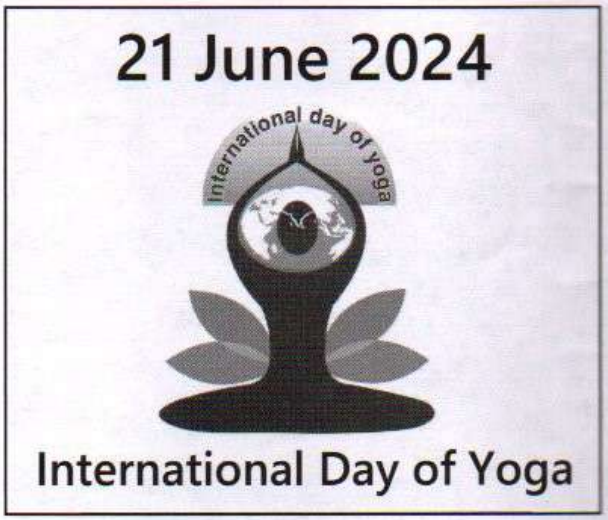

आश्रम परिसर में योग दिवस की सुन्दर झलकियां

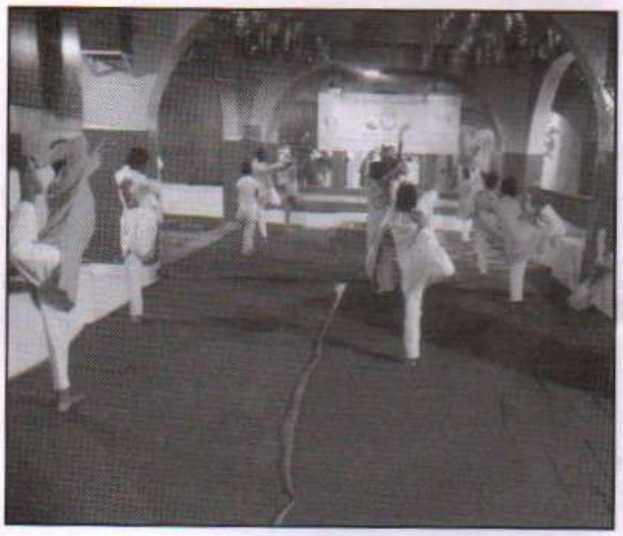
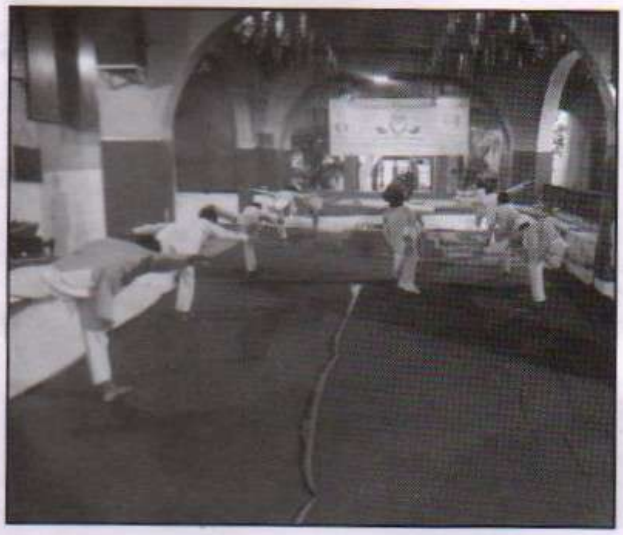

स्व. स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की पुण्य स्मृति में प्रेरणा दिवस की सुन्दर झलकियां

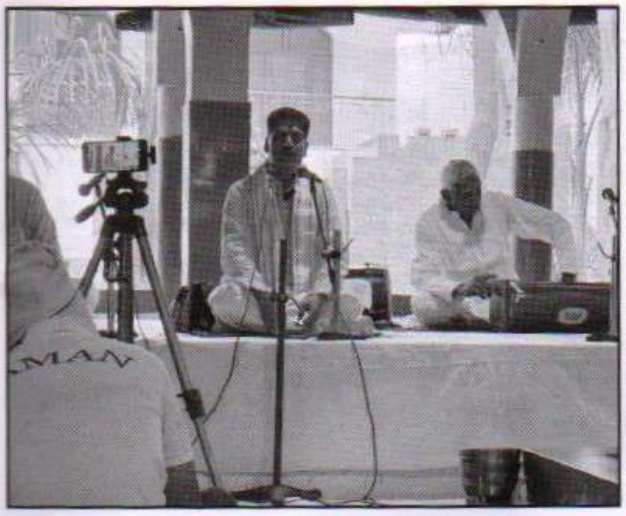

स्व. स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की पुण्य स्मृति में प्रेरणा दिवस की सुन्दर झलकियां

स्व. स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की पुण्य स्मृति में प्रेरणा दिवस की सुन्दर झलकियां

स्व. स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की पुण्य स्मृति में प्रेरणा दिवस की सुन्दर झलकियां

स्व. स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की पुण्य स्मृति में प्रेरणा दिवस की सुन्दर झलकियां

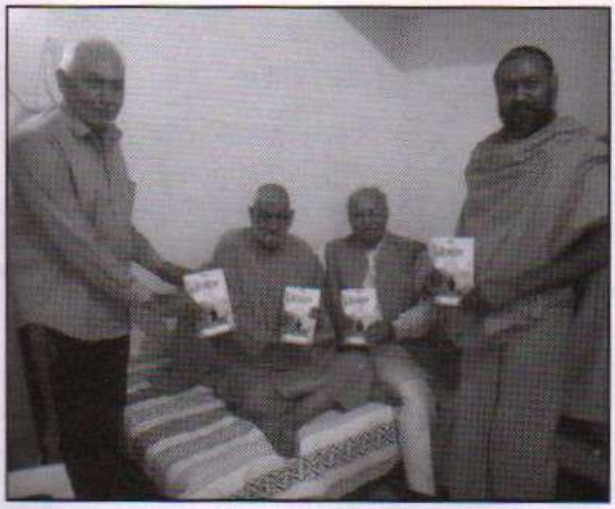

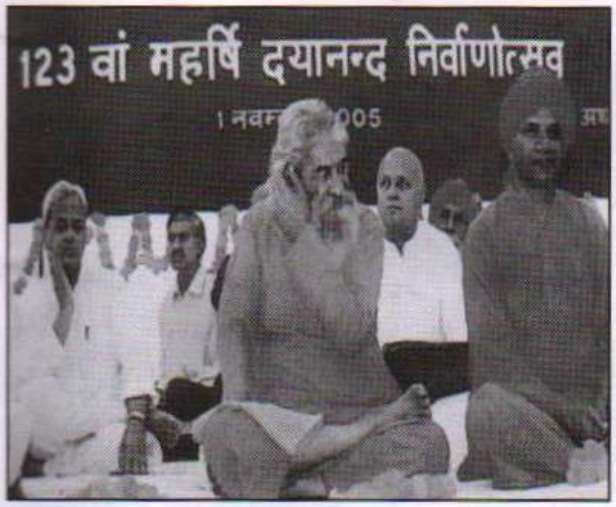

स्व. स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी की पुण्य स्मृति में प्रेरणा दिवस की सुन्दर झलकियां

मोटापा घटाएं रोगों पर विजय पाएँ

- डॉ. पुष्पलता गर्ग

मोटापा-आज आधुनिक सभ्यता की खतरनाक भेंट है और स्वास्थ्य की सबसे बड़ी समस्या है। हर वक्त कुछ न कुछ खाते रहना और उसके बावजूद बिल्कुल परिश्रम व व्यायाम नहीं करने से शरीर की चर्बी बढ़ जाती है। पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक मोटापा होता है क्योंकि औरतों में कुछ खास हार्मोन इसे और भी बढ़ा देते हैं। जो कैलोरी जलाई नहीं जा सकती, वह चर्बी के रूप में अंग-प्रत्यंग पर जमा हो जाती है। शरीर में चर्बी चढ़ने से शक्ल सूरत ही नहीं बिगडती अपितु कई बीमारियाँ भी घर कर जाती हैं। मोटे लोगों को उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, पित्तजनक, बीमारियाँ, मधुमेह, जोड़ों और माँसपेशियों का दर्द बढ़ जाता है। मोटापे से आयु कम हो जाती है। हिन्दी में एक कहावत है कि 'जितनी मोटी कमर, उतनी छोटी उमर'।

मोटापे का उपचार- इलाज से बचाव अच्छा है। इस कहावत के अनुसार हमें अपना आहार-विहार इस प्रकार सन्तुलित रखना चाहिए कि मोटापा न बढ़ पाए। यदि किसी कारण बढ़ भी गया हो, तो तुरन्त हमें सन्तुलित व प्राकृतिक आहार, शारीरिक परिश्रम व योग और प्राकृतिक विधियों द्वारा कम करने का प्रयास करना चाहिए।

सन्तुलित व प्राकृतिक आहार: औषधीय चिकित्सा पद्धति में मोटापे के उपचार के लिए थायरनक्सीन हारमोन का प्रयोग किया जाता है, जो काफी खतरनाक है। भूख मारने के लिए एमफैटामिन, फेन-मेटाजिन आदि औषधियाँ काम में लाई जाती हैं। इन औषधियों के दुष्प्रभाव से अनिद्रा, चिड़चिड़ापन तथा अन्य स्नायु व मानसिक विकृतियाँ परिलक्षित होती हैं। वस्तुत: मोटापा दूर करने का सबसे सरल उपाय हमारा संतुलित व प्राकृतिक आहार है। अत: मोटापा दूर करने के लिए कम कैलोरी का जैविक आहार लें। दैनिक कार्य के लिए 2500-3000 कैलोरी की आवश्यकता होती है परन्तु मोटे व्यक्तियों को प्रतिदिन 1000-1500 कैलोरी का ही आहार लेना चाहिए ताकि अतिरिक्त इक्कठी हुई कैलोरी खर्च हो। आज शिक्षित परिवार की महिलाएँ अपने घर के काम-काज को करना घोर अपमान समझती हैं। अपने हाथ से चक्की पीसना, पानी भरना, कपड़े धोना, बर्तन माँजना तो पृथक रहा, भोजन बनाना भी अच्छा नहीं समझतीं। ऐसी अवस्था में आहार तो उन्हें गरिष्ठ एवं पौष्टिक मिलें और शारीरिक परिश्रम वे किसी प्रकार का करे नहीं, तब तो मोटापा बढ़ना निश्चित है। यही कारण है कि आज भारतीय नारी स्वस्थ्य तथा सुन्दर परिवार की पोषक गृहणी न बनकर नाना रोगों से आक्रान्त, अपने परिवार के लिए सगं गृहणी बन रही हैं। भगवान ने स्वभावत: स्त्री को निरोग तथा सुन्दर बनाया है। यदि वे अपने घर के काम-काज के साथ-साथ, थोड़ा सा यौगिक व्यायाम भी प्रतिदिन नियमपूर्वक-कर लिया करें तो वे कभी भी बीमार नहीं पड़ेगी।

सूक्ष्म व्यायाम की क्रियाएँ- जैसे-जंघाशक्ति, पिण्डली-शक्ति, सर्वांग पुष्टि, इंजिनदौड़ आदि महत्वपूर्ण हैं। आसनों में धनुरासन, चक्रासन, सर्वांगासन, सूर्य नमस्कार आदि आसन मोटापा कम करने के लिए करना चाहिए।

मोटापा घटाने की प्राकृतिक विधियाँ गीली मिट्टी की पट्टी लगाना-

साफ मिट्टी को पीसकर छलनी से छान लेना चाहिए, वह मिट्टी रातभर भीगी रहे, इसके बाद एक फुट लम्बा और 6-7 इंच चौड़ा एक कपड़ा लेकर इस पर आधा इंच मोटी मिट्टी की रोटी सी फैला दें और कपड़े को मिट्टी सहित उठाकर मिट्टी की तरफ से पेट पर रखें। ऊपर से ऊनी कपड़ा लपेट दें। आधे घण्टे तक यह मिट्टी पट्टी पेट पर लगानी चाहिए। इसके बाद इसे हटाकर पेट को गीले कपड़े से पोंछ कर साफ कर दें और पेट की त्वचा को हथेली से रगड़कर मालिश कर लेना चाहिए। इससे पेट का मोटापा कम होता है।

कमर की गीली पट्टी-मोटापे में गीली पट्टी का बहुत उपयोग है। इसमें 6-7 फुट लम्बा तथा 6 इंच चौड़ा सूती कपड़ा ठण्डे पानी में भिगोकर थोड़ा निचोड़ लेते हैं और फिर पेट, नाभि और नितम्ब पर लपेटते हुए जंघा के बीच में से निकालकर नीचे के पूरे भाग को उक्त कपड़े से लपेटना चाहिए। ऊपर से एक सूखा कपड़ा लपेट दें, जिससे अन्दर हवा न जा सके। दो ढाई घण्टे लपेट कर लेट जाना चाहिए। मोटापा रोगों के साथ-साथ कब्ज, महिलाओं के मासिक रोग, पेट दर्द व वायु विकार, समस्त बीमारियों में यह विधि काफी लाभकारी है। प्राकृतिक चिकित्सा के अन्य उपचार जैसे- मालिश, भाप स्नान, सोनाबाथ, सूर्य स्नान, कटि स्नान, एनिमा आदि मोटापा घटाने में बहुत सहायक हैं।

दिनचर्या- प्रात: काल उठते ही आँवले का रस पीएँ, जिसकी मात्रा धीरे-धीरे आवश्यकता अनुसार बढ़ाएँ। भोजन के तुरन्त बाद 50-100 कदम पैदल धीरे-धीरे चलें एवं वज्रासन मुद्रा में जितनी देर बैठ सकते हैं, बैठें। भूख लगे तभी खाएँ, थोड़ा व चबा-चबाकर खाएँ, समय पर भोजन करें, भोजन छोड़ने की अपेक्षा कम खाना ज्यादा उपयोगी है। सप्ताह में एक दिन उपवास रखें, रोज प्रात: घूमना अनिवार्य करें। मोटी महिलाओं के लिए 1000 कैलोरी और मोटे पुरुषों के लिए 1500 कैलोरी का ही भोजन करें।

स्वास्थ्य चर्चा

मेधा-वृद्धि के लिए-आवश्यकतानुसार बच लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। इसमें इसके वजन के बराबर खाण्ड मिलाकर शीशी में सुरक्षित रखें। प्रतिदिन 3 ग्राम ओषधि गौ दुग्ध अथवा जल के साथ सेवन कराएँ। एक मास तक सेवन करने से मेधा की वृद्धि होती है। बच को चाकू से छीलकर 2 ग्राम के लगभग भोजन के पश्चात् मुख में रखकर चबाते रहें। इस प्रकार भी यह बहुत लाभदायक है।

मोटा करने वाला योग

1. जौ की घाट (अन्न-विक्रेताओं से मिल जाती है, अथवा जौ को पानी में भिगोकर कूटें और उसका छिलका उतार लें) की खीर बनाएँ अर्थात् चावल के स्थान पर इस घाट का प्रयोग करें। इस खीर के प्रयोग से दो मास में शरीर मोटा हो जाता है।

2. दूध में शहद डालकर पिएँ।

मोटापा कम करने के लिए

(1) प्रात: काल चावलों का गर्म-गर्म मांड नमक मिलाकर पिया करें। (2) गिलोय का चूर्ण और त्रिफला, दोनों 3-3 ग्राम लेकर प्रात: सायं मधु में मिलाकर चाटा करें। (3) भोजपत 10 ग्राम को चाय की भांति उबालकर पिया करें। (4) प्रतिदिन प्रात: पानी में शहद मिलाकर पिएँ। (5) प्रतिदिन प्रात: ताजा नीबू गर्म पानी में निचोड़कर पिया करें। (6) सूर्य के प्रकाश में खूब रहो, नग्न रहकर धूप सेंको। (7) हरी सब्जियों का सेवन करें, फल लें। चोकरवाले आटे की रोटी खाएँ। भोजन के साथ जल का सेवन न करें। भोजन के एक घण्टा पश्चात् थोड़ा-थोड़ा जल पिएँ। (8) 25 ग्राम नीबू के रस में 125 ग्राम पानी मिलाकर और यथास्वाद मधु मिलाकर शर्बत के समान खूब गड्डमड्ड करके पिला दें। शरीर में चाहे कैसी ही चर्बी बढ़ गई हो, घट जाती है। शरीर सुडौल बन जाता है। भोजन हल्का और दिन में एक बार करें। सायंकाल केवल फल लें।

बच्चों का भविष्य एवं उनकी समस्याएँ

बच्चों का भविष्य तीन तरह की समस्याओं में उलझ कर रहा गया है- 1. दूरदर्शन, फेसबुक, इण्टरनेट, चलभाष इत्यादि। 2. बाल्य श्रम, 3. बाल यौन शोषण।

बचपन मानव का निर्माण काल होता हैं एक बालक सफल मनुष्य तभी बन सकता है, जब उसकी नींव सुदृढ़ हो। महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि बालकों का सही निर्माण माँ के गर्भ से ही आरम्भ हो जाता है। बच्चों को उच्च संस्कार देने के लिए तथा उनके शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए, माता-पिता को अपने हृदय की इच्छाओं पर अंकुश रखकर गर्भ के समय से ही मर्यादा का पालन करना चाहिए। जैसे, महाभारत में अभिमन्यु को चक्रव्यूह भेदन की शिक्षा माता के गर्भ में ही प्राप्त हुई थी।

''मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्।
पिपृतां नो भरीमभिः॥''

- यजुर्वेद, अध्याय-13, मन्त्र-32

भावार्थ- हे माता-पिता। जैसे बसन्त ऋतु में पृथिवी और सूर्य सब संसार का धारण, प्रकाश और पालन करते हैं, वैसे ही तुम दोनों अपनी सन्तानों को अन्न (शुद्ध आहार), विद्या-दान और उत्तम शिक्षा देकर पूर्ण विद्वान् पुरुषार्थी करो। आजकल हमारे देश एवं समाज की अवस्था शनैः-शनैः पतन की ओर अग्रसर हो रही है। रात-दिन बलात्कार हो रहे हैं। चारों तरफ भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। धन और विलासिता में लोग डूबे जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता की ओर झुकाव सबसे बड़ी बाधा बन गया है। बच्चों का भविष्य नष्ट होता जा रहा है। ''दूरदर्शन'' पर युवतियों का आधुनिकता के चक्कर में अपने नश्वर शरीर की नुमाइश एवं कामुकता की हद को पार कर जाना भारतीय वैदिक संस्कृति पर कलंक जैसा है। समाचार पत्रों में, पत्रिकाओं में अश्लील व नंगी तस्वीरें, सबके घरों में हर उम्र के बच्चे देखते हैं, उन बच्चों के भावी सुचरित्र नागरिक बनने की संभावना को तिलांजलि देना है।

आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों (फेसबुक, इण्टरनेट, चलभाष इत्यादि) से बालकों को एक तरफ उन्नति करने का अवसर मिला है तो दूसरी तरफ उससे नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। बालक के जीवन का सबसे अहम् स्थान स्कूल है। वहाँ का वातावरण सीधा उनके मन पर प्रभाव डालता है। उन्हीं स्कूलों में ''इण्टरनेट'' को अनिवार्य घोषित किया जा चुका है। इण्टरनेट पर पढ़ाई के अलावा भी तो नाना प्रकार के अनुचित मार्ग पर ले जाने वाले आकर्षण है। इन सबकी वजह से बालकों का जीवन तो अनैतिकता के गर्त में जा गिरा है। ऐसी परिस्थिति में माता-पिता आचार्य का उत्तरदायित्व होता है कि बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा दें। अच्छे संस्कार देते हुए उनको सदाचार से युक्त, सुयोग्य एवं लायक बनावें। ''माता निर्माताः भवतिः'' माता बच्चे की प्रथम गुरु है। माता को उन्हें कुकर्मों से बचाना होगा, किसी भी अंग से कुचेष्टा न करने पावे ऐसा प्रयास करना होगा। उन्हें सत्यभाषण की आदत डालें, मादक द्रव्यों से दूर रखें। ऋग्वेद, मण्डल-7, सूक्त-2, मन्त्र-11 का भावार्थ- हे विद्वान्! जैसे सूर्य का प्रकाश दिव्य गुणों के साथ नीचे भी स्थित हम सभी को प्राप्त होता है और सत्य विद्या से युक्त उत्तम संतान वाली माता सुखपूर्वक स्थित होती है, वैसे ही विद्वान् हम सभी को, विशेषकर बालकों को, आप प्राप्त होकर अच्छी शिक्षा से सुखी कीजिए।''

स्वस्थ्य सामाजिक वातावरण एक बालक के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। परन्तु आजकल का आधुनिक समाज उसी बालक को ''बाल्य श्रमिक'' बनाकर स्वयं को गर्वित महसूस कर रहा है। ''बाल्य-श्रम'' पूरे विश्व की समस्या है। बाल्य-श्रम का औद्योगिक क्रांति में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। बच्चों को बाल्य-श्रमिक बनाने के दो मुख्य कारण हैं-(1) गरीबी और (2) शिक्षा का अभाव। इन दोनों कारणों की वजह से, मजबूरी में, आज लाखों-करोड़ों की संख्या में इन मासूम एवं सरल बच्चों से हानिकारक रासायनिक पदार्थों के मध्य कल-कारखानों में, घरों में, चाय दुकानों में, ढाबों में, तरह-तरह के अत्याचारों को सहन करते हुए काम करवाया जा रहा है। बच्चे पूरे विश्व का भविष्य हैं। उन्हें कितनी जिम्मेवारियाँ सम्भालनी हैं-

परिवार की, समाज की, राष्ट्र की एवं विश्व की

भी। अगर बचपन में ही बाल्य-श्रमिक बन जायेंगे तो कैसे अच्छे तथा प्रतिष्ठावान नागरिक बन पायेंगे। भारत में C.R.Y. (Child Rights and You) के स्वयं सेवी इस समस्या का समाधान निकालने की चेष्टा तो कर रहे हैं। परन्तु सरकार का भी उत्तरदायित्व है कि गरीबी के कारण बच्चों की शिक्षा में अभाव न आवे।

अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-2-6, मन्त्र-3, 4, 5 के अनुसार माता-पिता प्रयत्न करें कि सन्तान उत्तम गृहस्थ बने, जितेन्द्रिय होकर अपने दोषों और दूसरे शत्रुओं का नाश करें। अन्नवान्, बलवान् एवं धनवान् बनें। विद्वान् लोग उचित शिक्षा से उनकी रक्षा करें। प्रकृति से उपकार ग्रहण करके संसार में प्रवेश करें एवं आनन्द भोगें।

''बाल-यौन-शोषण'' बच्चों के लिए एक बहुत ही जटिल समस्या है। ज्यादातर घरवाले ही यह काम करते हैं। बच्चों को किस तरह सुरक्षित रखा जाये-यह एक बड़ा प्रश्न है। घर-घर में जाकर घरवालों की, बच्चों के माता-पिता को, स्कूलों में शिक्षकों को, अन्य वयस्कों को इस विषय में जानकारी देना बहुत जरूरी है। जिससे वे बच्चों की सुरक्षा करने को अपना कर्त्तव्य समझें और उसको निभाने का हर सम्भव प्रयास करें। बच्चों को सतर्क करना होगा। उन्हें शरीर के गुप्त अंगों के बारे में प्रशिक्षण देना होगा, जिससे कोई उन अंगों को छुए तो वे निर्भीकता से दूसरों को बोल सकें। हमें इसके लिए बच्चों के साथ मित्रों जैसा व्यवहार करना होगा। उन्हें विश्वास दिलाना होगा कि जब भी उन्हें जरूरत हो हम उनकी मदद के लिए सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। बच्चे निश्चयात्मक प्रशिक्षण के द्वारा आत्म-विश्वास एवं निर्भयता से अपने विश्वासपात्र को पहचानें व चुनें तथा उनसे अपनी समस्या की चर्चा भी करें। उन्हें ये भरोसा रहे कि वे जब चाहें हमारे पास आ सकते हैं, अपनी गलतियों को भी बता सकते हैं। दरअसल, हमारा सामाजिक वातावरण कुछ ऐसा निर्मित है कि बच्चे बड़ों के सामने कुछ बोल नहीं पाते। बड़े जो करें वही सही है-यही बात बच्चों के मन में कूट-कूट कर भरी रहती है। इस वजह से बड़े ऐसा कार्य करें (यौन-शोषण का) तो भी बच्चे डर से कह नहीं पाते। उसका शिकार होते चले जाते हैं। यह कार्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जारी रहता है। अगर बच्चों को बचपन में ही नियंत्रित न किया जाये या उनका डर न मिटाया जाये तो उनका सम्पूर्ण जीवन इससे प्रभावित होकर भावनात्मक एवं मानसिक प्रतिक्रियाओं से नष्ट हो सकता है। उन्हें यह अनुभूति न होवे कि उनके साथ विश्वासघात हुआ है। बच्चों का दुरुपयोग करने वाले व्यक्ति को चेतावनी देना जरूरी है। बच्चों को अपने माता-पिता से बातचीत करने का प्रोत्साहन मिलना चाहिए। आजकल माता-पिता को अपने बच्चों की बातें सुनने की फुर्सत नहीं मिलती या वे उनकी बातें सुनना ही नहीं चाहते। समस्याओं से मुँह न फेरकर, सकारात्मक विचारों के साथ हमें उसका समाधान निकालना होगा और बच्चों के जीवन को सुधारना होगा जो कि सम्भव है। लाखों-करोड़ों बच्चों की यह समस्याएँ हैं जो दु:खभरी हैं पर हैं सच्ची। स्वामी दयानन्द जी की आदर्श शिक्षा एवं वेदों के अध्ययन की आवश्यकता है। वेदों में सांसारिक एवं पारमार्थिक उन्नति दोनों का परिपूर्ण उपदेश प्रस्तुत है। स्कूल एवं कॉलेज में अगर वैदिक शिक्षा और संस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य कर दिया जावे तो एक सम्भावना की आशा की जा सकती है कि देर-सवेर बच्चों में धीरे-धीरे सुधार आ जावेगा। एकत्व, मित्रता, शान्ति, व्यवहारिक ज्ञान की जीवन में प्रधानता होगी। विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करना माता-पिता-आचार्य एवं सम्बन्धियों का प्रमुख कर्त्तव्य है। आध्यात्मिक विचारशक्ति एवं प्रभुभक्ति से उनके जीवन को विकसित करना होगा। वेद-विरुद्ध आचरण का निषेध कर, गुरु एवं विद्वान् लोग अपने ज्ञानरूपी, प्रकाश से, राष्ट्र के भावी नागरिक अर्थात् बच्चों के भविष्य को समस्या रहित करके चमका देवें।

- 19-सी, सरत बोस रोड, कोलकाता

आवश्यकता

गुरुकुल के छात्रों के लिए मुख्य आवश्यकता स्कूल पुस्तक की है जो भी भक्त जन इसमें सहयोग करना चाहते है कर सकते है, सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें- आचार्य अमृत आर्य, मो. 9990108323

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री राजपाल जी समाजसेवी, निठारी दिल्ली
2. श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी, लाजपत नगर, दिल्ली
3. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
4. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
5. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
6. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
7. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
8. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
9. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
10. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
11. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
12. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
13. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
14. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
15. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21 अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
59. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
60. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
61. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
62. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
63. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
64. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
65. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
66. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
67. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
68. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
69. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
70. श्री रवि कुमार जी आर्य, एच.एल सिटी, बहादुरगढ़
71. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड़, बहादुरगढ़
72. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, डी-204, हेरिटेज मैक्स, सैक्टर-102, गुरुग्राम, हरियाणा
73. श्रीमती रीटा चड्डा, डी-204, हेरिटेज मैक्स, सैक्टर-102, गुरुग्राम, हरियाणा
74. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
75. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा
76. श्री मुकेश कुमार जी सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी हरेवली, दि.

अकाल मृत्यु तथा भूत-प्रेत योनि की विवेचना

भूत-प्रेत की उत्पत्ति के विषय में कुछ अज्ञानी, अशिक्षित और स्वार्थी लोगों ने यह धारणा बना रखी है कि जिनकी अकाल मृत्यु होती है, यानि जिनकी मृत्यु दुर्घटना से या अस्वभाविक होती है। वे लोग अपने शेष जीवन में भूत-प्रेत की योनि में चले जाते हैं। यह सर्वमान्य बात है कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। यह बात भूत-प्रेत पर भी लागू होनी चाहिए। जिस जीव ने भूत-प्रेत की योनि में जन्म लिया है तो उसकी मृत्यु भी होनी चाहिए। परन्तु उनके मरने की बात कभी सुनने में नहीं आई।

अकाल मृत्यु प्राप्त जीव भूत-प्रेत की योनि में जाते हैं, यह सिद्धान्त कीट-पतंग, पशु-पक्षी और अनेकों अदृश्य जीवों पर भी लागू होनी चाहिए, जो प्रतिदिन मनुष्यों द्वारा मारे जाते हैं या मार दिये जाते हैं या प्राकृतिक आपदाओं-आंधी, तूफान, भूकम्प, बाढ़ आदि में मनुष्यों से अधिक मर जाते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार इनको भी भूत-प्रेत की योनि में जाना चाहिए। तब कल्पना करें कि इस संसार में भूतों की संख्या मनुष्यों की अबादी से भी कई गुणा अधिक होनी चाहिए, परन्तु ऐसा देखने में नहीं आता है। अत: यह कहना कि अकाल मृत्यु प्राप्त जीव भूत-प्रेत की योनि में जन्म लेता है, यह न तर्क सम्मत है और न विज्ञान सम्मत।

भूत-प्रेत की योनि होती ही नहीं- जीव का स्थूल शरीर, मन, व इन्द्रियादि साधनों के साथ ईश्वरीय व्यवस्थानुसार संयोग जन्म है, अर्थात् सुक्ष्म शरीर युक्त जीव का स्थूल शरीर के साथ संयोग का नाम ही यानि है। केवल सुक्ष्म शरीर के आधार पर भूत-प्रेत योनि को प्रमाणिक नहीं माना जा सकता है, क्योंकि बिना शरीर के कोई भी योनि नहीं होती है। स्थूल शरीर के बिना कोई भी सुक्ष्म शरीर न तो दिखाई देता है और न कोई भौतिक क्रिया ही कर सकता है। प्रजनन की विधाओं के आधार पर योनियों को चार भागों में विभाजित किया गया है- जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज। जरायुज का तात्पर्य है जेर से होने वाले प्राणी, जैसे मनुष्य, गाय, भैंस। अण्डज का तात्पर्य है अण्डे से होने वाले प्राणी जिसमें अधिकतर पक्षी आते हैं। स्वेदज का तात्पर्य मैला या गन्दगी में पैदा होने वाले प्राणी, जैसे जुएँ, गन्दी नाली के किटाणु। उद्भिज्ज का तात्पर्य है, जमीन से उगने वाले प्राणी जैसे पेड़-पौधे इन्हीं चार योनियों में समस्त प्राणियों का समावेश हो जाता है। इनके अतिरिक्त पाँचवीं योनि का कोई विधान नहीं है। यह ईश्वर प्रणीत शाश्वत सिद्धान्त है। इसका उल्लंघन करने की शक्ति किसी भी जीव में नहीं है। स्मरण रहे जीव सर्वदा पराधीन होता है। पराचीन वेद, शास्त्र, रामायण और गीता आदि प्राचीन ग्रंथों में कहीं पर भी भूत-प्रेत की योनि का विधान नहीं है।

कहा यह जाता है कि जिनकी अकाल मृत्यु होती है यानि जिनकी मृत्यु दुर्घटना से या अस्वभाविक मृत्यु होती ये लोग अपने शेष जीवन में भूत-प्रेत, योनि में चले जाते हैं और इधर- उधर भटकते रहते हैं। कभी-कभी भूत-प्रेत परकाया में प्रवेश कर जाते हैं और उनको सताते हैं या कष्ट देते हैं। वे सामान्यत: अपने परिचितों और स्वजनों को ही अधिक परेशान करते हैं या कष्ट देते हैं। दिवंगत आत्मा का इधर-उधर भटकना सम्भव नहीं क्योंकि वह ईश्वराधीन होने के कारण स्वतंत्रता से कुछ भी नहीं कर सकता है। परकाया में प्रवेश करना भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है, क्योंकि एक शरीर में एक ही आत्मा रह सकती है। आत्मा प्रलयकाल और मोक्षावस्था को छोड़कर वह बिना शरीर के कभी नहीं रहता है। इन दोनों अवस्थाओं में वह अदृश्य रहता है।.

यह निर्विवाद सत्य है कि मृत्यु के पश्चात् ईश्वरीय व्यवस्थानुसार जीव या तो दूसरे शरीर को धारण कर लेता है या मोक्ष को प्राप्त होता है। इस बीच उसके किसी अन्य के शरीर में प्रविष्ट होने या इधर-उधर घूमकर लोगों के जीवन में अच्छा-बुरा दखल देने का प्रश्न ही नहीं उठता है। मोक्ष प्राप्त जीवात्माएँ पवित्र और आनन्द मग्न रहती हैं, वह परकाया में प्रवेश कर किसी मनुष्य को कष्ट या

यातनाएं दे, यह मानना अस्वाभाविक है।

मृत्यु के पश्चात् जीव को एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में जाने में कितना समय मिलता है, इसका निर्देश वेदान्त दर्शन 3/1/13 वृहदारण्यक उपनिषद् 4/4/3 तथा गरूड़ पुराण-प्रेत अध्याय 20 श्लोक 75 में लिखा है कि- जैसे घास की सूँडी या जोक या तृणजलायुकृत भी पीछे से दूसरा पाँव उठाती हैं जब कि अगला पाँव रख देती है, ठीक वैसे ही आत्मा भी अपने पहले शरीर को छोड़ने से पूर्व ईश्वर की न्याययुक्त कर्मफल व्यवस्था से अगले शरीर में स्थिति कर लेने के पश्चात् ही अपने उस शरीर को छोड़ता है।

स्थूल शरीर के बिना कुछ भी करना सम्भव नहीं अत: ईश्वर की व्यवस्था में यह आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को तुरन्त ग्रहण कर लेता है। महाभारत वनपर्व 183/77 में कहा है- आयु पूर्ण होने पर आत्मा अपने जर्जर शरीर का परित्याग करके उसी क्षण किसी दूसरे शरीर में प्रकट होता है। एक शरीर को छोड़ने और दूसरे शरीर को ग्रहण करने के मध्य में उसे क्षण भर का समय भी नहीं लगता। अत: वैदिक सिद्धान्त के अनुसार मृत्यु और जन्म के बीच कोई समय ही नहीं बचता कि जिसमें जीवात्मा इधर-उधर भटक सके या भूत-प्रेत बन सके। सच्चाई यह है कि शरीर छोड़ने के पश्चात् जीवात्मा परमात्मा के अधीन रहता है और वह स्वतन्त्रता से कुछ नहीं कर सकता। संसार का कोई भी व्यक्ति भूत-प्रेत आदि के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकता, अत: निश्चित मानिये कि तथाकथित भूतों की न कोई सत्ता है और न कोई योनि है।

सच्चाई यह है कि दुर्घटना या अस्वभावि मृत्यु प्राप्त व्यक्ति अपनी बाकी की उम्र अगली योनि में व्यतीत करता है अर्थात् उसकी जो अगली योनि में जितनी उम्र निर्धारित होती है उसमें पहले वाली उम्र जोड़ दी जाती है। अब प्रश्न उठता है कि मृत्यु प्राप्त व्यक्ति यदि मनुष्य योनि में भी उसी स्तर में जन्म लेता है तब तो यह बात लागू हो सकती है। पर वह यदि अन्य योनियों में यानि पशु-पक्षी व कीट-पतंग की योनि में जाता है या पहले वाले मनुष्य जीवन के ऊँचे या नीचे स्तर की मनुष्य योनि ही पाता है तो उसकी आयु ईश्वर की कर्म न्याय व्यवस्था के अनुसार घट या बढ़ भी सकती है।

यह लेख मैने अति उपयोगी समझकर 'मानव निर्माण प्रथम सोपान' नामक पुस्तक से उद्धृत किया है जिसमें अन्त की 6-7 लाइने मैने अपने स्वयं के विचार से पहले कभी किसी पुस्तक में पढ़ा था उसके आधार पर लिखी है जिससे लेख के उद्देश्य की पूर्ति होती है। इस लेख के पढ़ने से हर व्यक्ति भूत-प्रेत की योनि नहीं होती यानि भूत-प्रेत का भय एक प्रकार का वहम् है, इसलिए हर समझदार व्यक्ति को भय नहीं होना चाहिए और अपने बच्चों की भी यही शिक्षा देनी चाहिए ताकि बच्चे निर्भीक बने और देश व समाज की सेवा अधिक कर सकें।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507,

चलभाष : 09416054195

रक्षा बन्धन का शास्त्रीय स्वरूपः श्रावणी उपाकर्म

- रामनिवास 'गुणग्राहक'

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के रूप में इस देश और विश्व के सौभाग्य ने अंगड़ाई लेकर जागने का जो पुण्य प्रयास किया था, उसका पूरा लाभ लेने के लिए हमें जो तप या श्रम करना चाहिए, आलस्य-प्रभाव व अविद्या से ग्रस्त भारतीय जनमानस वह तप व श्रम नहीं कर सका। परम्परावादी प्रवृत्ति के चलते हम भारतीय ऋषि द्वारा पुनः प्रकाशित वेद विद्या के प्रखर तेज को सहन और वहन नहीं कर सके। ऋषिवर ने सप्रमाण, सतर्क यह समझाने का सफल प्रयास किया कि महाभारत के भयंकर युद्ध के बाद हमारे बल-पराक्रम और हमारी बौद्धिक प्रतिभा को बहुत गहरा आघात लगा। चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने वाला बल-पौरूष एक-दूसरे पर घात-प्रतिघात में नष्ट-भ्रष्ट होना ही था। विश्वगुरू का गौरव जब टुकड़ों में स्वार्थवश कट-छँट और बँट गया तो वाग्विलास और विवाद-वितण्डा का रूप धर तर्कों की तलवार से क्षत-विक्षत होकर चेतना शून्य हो गया। कोरी तर्क वादिता से प्रताड़ित हमारा ईश्वरीय ज्ञान वेद अधकचरे आचार्यों के हाथों का खिलौना बन कर रह गया **'विवेकभ्रष्टानां विनिपात शतमुखः'** के अनुसार सत्य-असत्य के सच्चे विवेक से भ्रष्ट होकर हम सर्वतो मुख पतित होने लगे। उस पतित-अवस्था में बौनी सोच का दुष्परिणाम ये निकला कि अधकचरे आचार्यों ने हमारी वैदिक परम्परा के ऋषियों के ज्ञानागम् ग्रन्थों में मनमानी मिलावटें कर डालीं और विश्व द्वारा वैदिक संस्कृति को प्रदूषित कर दिया। देश का शेष दुर्भाग्य क्रूर मुस्लिम आक्रान्ताओं और कुटिल अंग्रेजों के रूप में आ धमका। मुस्लिम आक्रान्ताओं ने हमारे पुस्तकालयों से अपने हमाम गर्म किये तो अंग्रेजों ने अवशिष्ट ग्रन्थों को विद्रूपित करके अविश्वसनीय बनाने का सुविचारित षड्यन्त्र चलाया, जो आज भी अबाध गति से चल रहा है। मानवीय सभ्यता, दैवीय संस्कृति और नर-निर्माण में सक्षम संस्कारों से सुसज्जित भारत रूपी लहलहाते वृक्ष की ज्ञान परम्परा रूपी जड़ों में स्वार्थ जन्य अपशिष्ट विचारों का मैलापन डालने का पाप ही फलीभूत होकर मुस्लिम आक्रान्ताओं व कुटिल अंग्रेजों के रूप में कालान्तर में प्रकट हुआ। इन सबके सम्मिलित कुकृत्यों की काट लेकर आने वाले ऋषि दयानन्द की कृपा से हमें हमारे प्राचीन गौरव की एक झलक प्राप्त हुई। हमारे दुर्बल मन-मस्तिष्क उसे संभाल न पाये और आज धीरे-धीरे वो वैदिक संस्कृति की धवलधार भी धुँधली होने लगी है। आर्यो! अपनी जीवन-ज्योति की आहुति देकर आचार्य दयानन्द द्वारा रचाये विश्वकल्याण यज्ञ की आग्नि आने वाली पीढ़ियों तक जलाये खो। भरोसा रखो, निकट भविष्य मे आने वाली पीढ़ियाँ इस यज्ञ को सफलता के शिखर तक अवश्य ले जाएँगी। अवश्य ही ले जाएँगी।

सुधी पाठक! क्या आप ऋषि दयानन्द द्वारा रचाये विश्वकल्याण यज्ञ की प्रज्ज्वलित समिधा बनने को तैयार हैं? न करने के लिए हमारे पास अवकाश ही नहीं है। कल हमारे पास संभालने को कुछ नहीं बचेगा। अपने जीवन से, अपने पुत्र-पौत्रों से थोड़ा-सा भी प्यार है तो हमें वैदिक संस्कृति को बचाने और बढ़ाने में अपना तन-मन और धन लगाना ही होगा। **'छन्दः पादौ वेदस्य हस्तौ कल्पऽपठ्यते'** के अनुसार कल्पशास्त्र को ऋषियों ने वेदांगों में हाथ ही उपमा दी है। वर्ण व्यवस्था में मुख स्थानीय ब्राह्मण का काम विद्या-व्यवहार है तो हाथ स्थानीय क्षत्रिय का काम रक्षा करना कहा है। इसी प्रकार वेद के अंगों में कल्प को हाथ कहना सिद्ध करता है कि वेद और वैदिक संस्कृति की रक्षा कल्प साहित्य पर ही निर्भर है। कल्प साहित्य में हमारे गृह्यसूत्रों व शुल्व सूत्रों की गणना है, जिनमें हमारे पर्वों, संस्कारों व यज्ञों का सांगोपांग विज्ञान-सम्मत वर्णन है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हमारे पर्व-त्यौहार, हमारे पर्वों, संस्कारों व यज्ञों का सांगोपांग विज्ञान-सम्मत वर्णन है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हमारे पर्व-त्यौहार, हमारे पंच महायज्ञ और हमारे संस्कारों के शास्त्रोक्त स्वरूप में ही वेद और वैदिक संस्कृति की सुरक्षा निहित है। वेद और वैदिक संस्कृति की सुरक्षा-संवृद्धि चाहने वालों का प्रथम कर्तव्य है कि वे अपने पर्वों यज्ञों व संस्कारों के शास्त्रीय स्वरूप को समझें व दूसरों को समझाएँ। संस्कृति की सुरक्षा-संवृद्धि की दृष्टि से पर्वों की बात करें तो श्रावणी उपाकर्म के शास्त्रीय स्वरूप को समझना और इसे शास्त्रोक्त रीति से मनाना सुधार के बीजारोपण जैसा है। सर्वप्रथम श्रावणी उपाकर्म को समझें, वर्ष के बारह महीनों का नामकरण हमारे ऋषियों ने खगोलीय घटनाओं के आधार पर किया। जस नक्षत्र को पूर्णिमा होती है, उस माह का नाम उस नक्षत्र पर आधारित है। जैसे, चित्रा नक्षत्र को पूर्णिमा होती है, उस माह का नाम उस नक्षत्र पर आधारित है। जैसे, चित्रा नक्षत्र के कारण चैत्र, विशाखा के कारण वैशाख। इसी

प्रकार श्रावण नक्षत्र को पड़ने वाली पूर्णिमा श्रावणी और महीना श्रावण या सावन कहलाता है। पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार - **'अथातो स्वाध्ययोपाकर्मः'** अर्थात स्वाध्याय को उपाकर्म कहते हैं। पर्व पद्धति में मनुस्मृति के दो श्लोक - **"श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां-विपोऽध पञ्चयान्॥"** तथा **"पुष्ये तुछन्दसां कुर्माद्-वृचर्सहृणे प्रथमेऽहनि॥"** देकर बताया है कि मनु आदि प्राचीन शास्त्रकारों के अनुसार श्रावण माह की पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर पौषी (पौष माह की) पूर्णिमा या माघ माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन तक उपाकर्म का अनुष्ठान चलता था।

उपाकर्म अर्थात् स्वाध्याय, स्वाध्याय के लिए प्रभु की कल्याणी वेदवाणी को ही सर्वोत्तम माना गया है। ब्राह्मण का तो यह स्वाभाविक धर्म है कि वह छः अंगों सहित वेद का सतत् स्वाध्याय करे। महर्षि मनु महाराज वेद को धर्म का मूल मानते हैं - **"वेदोऽखिलोधर्ममूलम्"**। मनु की मान्यता है - **'धर्म जिज्ञासमानाना प्रमाणं परमं श्रुतिः'** धर्म जिज्ञासुओं के लिए वेद परम् प्रमाण है। महाभारत के शान्ति पर्व में आता है - **'सर्वं विदुर्वेदविदो, वेदे सर्वं प्रतिष्ठितम्। वेदे हि निष्ठा सर्वस्य, यद्पदस्ति नास्ति च॥'** (270-43)। अर्थात् वेद वित् सब कुछ जानते है, वेद में सम्पूर्ण ज्ञान प्रतिष्ठित है। सबकी निष्ठा वेदों के प्रति है, जो ज्ञान वेद में है वो अन्यत्र कहीं नहीं है। महर्षि मनु भी वेद में सम्पूर्ण विद्या मानते हुए लिखते हैं - **'वेदेषुसर्वा विद्या सन्ति भूलोद्देश्यतः'** अर्थात् वेदों में मूल रूप से सब विद्याएँ हैं। इसीलिए देव दयानन्द घोषणा करते हैं- 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम् धर्म है।' चिन्तनीय यह है कि जिस वेद विद्या के पुनरुद्धार के लिए ऋषिवर अपना पूरा जीवन खपा गये, जिस वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना ऋषिवर हमारे लिए धर्म ही नहीं परम् धर्म बताकर गये हैं, दुर्भाग्य से आज उसी वेद का पढ़ना-पढ़ाना ही छूट गया तो सुनना-सुनाना कैसा?

आर्यों! हमारे पूर्वज ऋषि-महर्षि कितने दूर दृष्टा थे कि वे वेद को हमारे पारिवारिक जीवन और सामाजिक ताने-बाने के साथ इतनी गहराई से बाँध गये थे ताकि वेद विद्या हमारे जीवन में सदा-सदा के लिए ओतप्रोत हो जाए। जन्मते ही बालके के कान में **'त्वम् वेदोऽसि'** कहना हो या -**'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद'** की अवधारणा, दीक्षान्त के समय **'स्वाध्यायो या प्रमदः'** का आदेश हो या संन्यास के समय- **'संन्यसेत् सर्व कर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत्'** की मर्यादा-सर्वत्र वेद से जुड़े रहकर जीवन वेदमय बनाने के स्वर सुनाई दे रहे हैं और हम हैं कि सबको अनसुना करके वेद विद्या से विमुख हुए बैठे हैं। श्रावणी उपाकर्म हर वर्ष वेद से जुड़ने की प्राचीन परम्परा को प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत करता हुआ आता है, हम आर्य कहलाने वाले वेद स्वाध्याय का महत्त्व समझे। आदि शंकराचार्य कठोपनिषद का भाष्य करते हुए लिखते हैं - **'नहि उपेक्षितव्यं इति श्रुतिः अनुकम्पा आह अतृवत्'** (1. 3.14) अर्थात् वेद की कभी उपेक्षा मत करो, वेद माँ के समान स्नेह पूर्वक हमारे कल्याण की बात कहते हैं। आर्यों! स्वयं को शंकराचार्य के शिष्य कहने वाले कथित सनातन धर्मी तो सनातन वेद विद्या से विमुख होकर पुराण पन्थी बनकर पाखण्डों और अन्धविश्वासों के अन्धकूप में पड़े हैं, ऐसे में वेद विद्या के लिए जीवन खपा देने वाले ऋषि दयानन्द के अनुगामी हम आर्यों का कर्त्तव्य बढ़ जाता है। धरती तल पर केवल आर्य समाज ही है जो प्रभु की वेद वाणी के लिए ही जीता-मरता है। हम भी आलस्य-प्रमाद में पड़े रहे, या क्षुद्र स्वार्थों के लिए लड़ते रहे तो हमारा अपराध आतंकवादियों के अपराधों से भी बड़ा अपराध होगा। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है, कर्मफल व्यवस्था के तात्त्विक स्वरूप को समझने वाले मनु महाराज ने जो दण्ड विधान किया है, उसके अनुसार विद्या विभूषित ब्राह्मण और राजव्यवस्था में बड़े पद पर आरूढ व्यक्ति को अधिक दण्डनीय माना है। जिनके कन्धों पर देव दयानन्द वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार का महनीय दायित्व रख गये, या जिन्होंने आर्य समाज से जुड़कर स्वेच्छा से यह उत्तरदायित्व स्वीकारा है, उन आर्यों की कर्तव्य परायणता विश्वकल्याण के द्वार खोल सकती है। दूसरी ओर देखें तो उनकी कर्तव्यहीनता वेदविद्या की सुलभता को संकट में डाल सकती है। हम जिस ज्ञान परम्परा के प्रतिनिधि बने हुए हैं, उसमें कुछ न करना भी भयंकर पाप है। एक गोदाम की सुरक्षा में नियुक्त सिपाही और देश की सीमा की सुरक्षा में नियुक्त सैनिक, इन दोनों की असावधानी का परिणाम एक समान नहीं हो सकता तो इनका दण्ड भी समान नहीं होगा। आर्य समाज से जुड़ा हर व्यक्ति प्रभु की वेदवाणी के प्रचार-प्रसार अभियान से जुड़ा ऐसा महान् सैनिक है, जिसके कन्धों पर विश्वकल्याण का भार है। श्रावणी पर्व हमें हमारे उस महनीय कर्त्तव्यभार को वहन करने की प्रेरणा देते हुए हमारे अन्दर कर्तव्य निर्वाह की शक्ति का संचार करता है। आर्यों! वेद विद्या की महत्ता अपने आर्योचित कर्त्तव्यों का मूल समझो और **'कृणवन्तो विश्वमार्यम्'** के अभियान में जुट जाओ। **धियो यो नः प्रचोदयात्॥**

मो. 7597894991, 9079039088

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री जीन्द हरियाणा	10000/-
श्रीमती स्व. मायावन्ती जी धर्मपुरा बहादुरगढ़	5100/-
श्रीमती स्व. शकुन्तला देवी धर्म श्री तेजपाल सिंह जी प्रधान, टीकरी कलां दिल्ली	5100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़	4000/-
श्री भीम सिंह जी डागार गांव विलोठी	3200/-
श्री कैप्टन महेन्द्र सिंह पंवार, आश्रम बहादुरगढ़	3000/-
गुप्त दान सैक्टर-14, बहादुरगढ़	2100/-
श्री चौधरी परिवार विकास पुरी, दिल्ली	2100/-
श्री ईश्वर सिंह जी बैंक कॉलोनी, बहादुरगढ़	2100/-
श्री मा. दलबीर सिंह जी सैक्टर-2, बहादुरगढ़	2100/-
श्री सुरेन्द्र जी राठी सुपुत्र मास्टर राणा राठी जी 7 विश्वा श्री जटवाड़ा, बहादुरगढ़	2100/-
श्री तुषार जी गुलिया काठमण्डी बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती मोनिका जी सैक्टर-9, बहादुरगढ़	1100/-
श्री विजेन्द्र कुमार जी सुपुत्र श्री भूप सिंह जी गांव परनाला, बहादुरगढ़	1100/-
बादली आर्य समाज झज्जर, हरियाणा	1100/-
श्री राजेश जी राठी प्रधान आर्य समाज सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री हार्दिक स्वामी जी सुपुत्र श्री हरि प्रकाश जी गांव झड़ौदा कलां दिल्ली	1100/-
श्री मा. प्रभु दयाल जी ठुकराल मनोहर नगर, विकासपुरी, दि	1100/-
श्रीमती सुदेश देवी पत्नी श्री प्रि. जयपाल जी दहिया मन्त्री सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री दीपक राठी जी गांव परनाला बहादुरगढ़	1100/-
श्री सौरभ जी सुपुत्र श्री जगवीर जी सैक्टर-2, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती सन्तोष माता जी कुली नम्बर आश्रम बहादुरगढ़	1100/-
श्री दीपक जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री रामदेव जी आर्य रोहतक	500/-
श्री शरद जी ठुकराल सुपुत्र श्री प्रभुदयाल जी ठुकराल मनोहर नगर, विकासपुरी, दिल्ली	1000/-
श्री ओमकार जी धर्म विहार, बहादुरगढ़	800/-
श्री पंडित जय भगवान जी झज्जर हरियाणा	550/-
श्रीमती सरोज देवी पत्नी श्री विजेन्द्र कुमार जी गांव परनाला, बहादुरगढ़	500/-
श्री राम कुमार जी कुटिया नम्बर 4 आश्रम बहादुरगढ़	500/-
श्री रणवीर जी कुटिया नम्बर-9, आश्रम बहादुरगढ़	500/-
श्री संदीप जी दिल्ली	500/-
श्री राजपाल जी दहिया एच.एल. सिटी, बहादुरगढ़	500/-
श्री प्रो. बलवान सिंह जी सोलंकी आश्रम, बहादुरगढ़	500/-
श्री रविन्द्र जी आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री रविन्द्र जी गुप्ता आटो मार्किट, बहादुरगढ़	500/-
श्री राज सिंह जी दहिया सु. श्री अजित सिंह जी दया.नगर	500/-
गुप्त दान	500/-
श्री प्रदीप जी तंवर गांव सांखौल बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती प्रमिला माता जी वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	500/-
श्री बृजेश जी आर्य त्रिनगर, दिल्ली	500/-
श्री प्रदीप जी बड़बुजर ओमैक्स सिटी, बहादुरगढ़	500/-
श्री रमेश जी दराल गांव टीकरी दिल्ली	500/-
श्री धन्ना सिंह जी वर्मा, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री अशोक जी छिकारा सैक्टर-2, बहादुरगढ़	500/-
श्री धर्मवीर जी सुपुत्र श्री भूदेव जी टीकरी कलां दिल्ली	500/-

गौशाला हेतु दान

श्रीमती सुमित्रा देवी जी काठमण्डी, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती सन्तोष माता जी कुटी नम्बर 4, आश्रम बहादुरगढ़	1100/-

विविध वस्तुएं

श्री सतीश जी बहादुरगढ़	20 किलो आटा
श्रीमती माया देवी	10 किलो आटा और बिस्कुट का पैकेट
श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर दिल्ली	2 टीन सरसों का तेल
श्री दीपक जी गांव परनाला बहादुरगढ़	आटा 10 किलो, चीनी 5 किलो, जलजीरा एक पेटी
श्री राजेश जी रेहानी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	5 पेटी जल जीरा
श्री समीर जी महाजन	तीन कट्टे चावल, दस किलो चना, दस किलो छोले, दस किलो दाल, दस लीटर सरसों का तेल एवं फल
श्री गम्भीर जी	आटा दाल चावल चीनी आदि
श्री चरणजीत जी दुआ मेन बाजार, बहादुरगढ़	30 किलो चावल

विशेष भोजन

रेयान्श के बाबत	आश्रम के सभी बच्चों को अल्पाहार कराया गया
श्री विकास के जन्म दिवस के अवसर पर	सभी बच्चों को अल्पाहार कराया गया
श्री समीर जी महाजन पुत्र की स्मृति मध्य	एक समय का विशेष भोजन
श्री कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पवार	एक समय का विशेष भोजन
श्रीमती मायावन्ती जी धर्मपुरा, बहा.	एक समय का विशेष भोजन
श्री संदीप जी सैक्टर-6 बहादुरगढ़	एक समय का विशेष भोजन

मुद्रक व प्रकाशक : आचार्य विक्रमदेव, सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 जुलाई 2024 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

प्रतिष्ठित समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार की कटिंग

काम नेकी के जो कर गए...उनकी रोशन कहानी रहेगी

काम नेकी के जो कर गए...उनकी रोशन कहानी रहेगी

» स्वामी धर्ममुनि जी की पुण्यतिथि पर हुआ भव्य आयोजन

पुण्यतिथि पर स्वामी धर्ममुनि को किया याद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में स्वामी धर्ममुनि को श्रद्धांजलि देते आचार्य विक्रम देव व अन्य।

आत्मशुद्धि आश्रम के संस्थापक स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी की चतुर्थ पुण्यतिथि को आश्रम परिसर में प्रेरणा दिवस के रूप में मनाया गया। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य भद्रकाम के सानिध्य में हुए इस स्मृति शेष कार्यक्रम की अध्यक्षता आश्रम ट्रस्ट के प्रधान कन्हैयालाल आर्य ने की और मंच संचालन आर्य राजबीर छिकारा ने किया।

कार्यक्रम में आर्यसमाज झज्जर, दादरी व बहादुरगढ़ सहित कई शहरों के आर्य प्रतिनिधि उपस्थित रहे। यज्ञ से शुरू हुए इस कार्यक्रम में आश्रम के अधिष्ठाता आचार्य विक्रम देव, स्वामी रामानंद, शिव स्वामी, विद्यानंद शास्त्री, देव शर्मा, जयभगवान आर्य, हरिओम दलाल, सहदेव आर्य, देवेन्द्र आर्य, अशोक जून, जयपाल दहिया, राजेश राठी व कृष्ण गोपाल विद्यार्थी ने स्वामी धर्ममुनि जी को अपने भावपुष्प अर्पित करते हुए उनसे जुड़े कई रोचक व प्रेरक संस्मरण सुनाए। भजनोपदेशक सतीश सुमन ने अपनी संगीतमय प्रस्तुति से स्वामी जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। आश्रम के बाल ब्रह्मचारियों ध्रुव, सुभाष व उनके साथियों द्वारा प्रस्तुत भजनों को भी सराहा गया। शांतिपाठ व ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

'स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी के जीवन से लेनी चाहिए प्रेरणा'

स्वामी धर्ममुनि जी की पुण्यतिथि पर हुआ भव्य आयोजन

काम नेकी के जो कर गए... उनकी रोशन कहानी रहेगी

वॉइस ऑफ़ बहादुरगढ़

+91 8059040825

काम नेकी के जो कर गए...उनकी रोशन कहानी रहेगी

स्वामी धर्ममुनि जी की पुण्यतिथि पर हुआ भव्य आयोजन

8 | डेली बहादुरगढ़

काम नेकी के जो कर गए...उनकी रोशन कहानी रहेगी

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक
जुलाई 2024
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

प्ताहिक
निधि
.३ नई दिल

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयो दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। अपने प्रियों के नाम पर कमरा बनवाने के इच्छुक सम्पर्क कर सकते है। आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। धन्यवाद!

—व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र:9416054195

आगामी कार्यक्रम

आत्म शुद्धि आश्रम का "58वां स्थापना दिवस वार्षिकोत्सव समारोह" बृहस्पतिवार 26 सितम्बर 2024 से बुधवार 2 अक्टूबर 2024 तक आश्रम में ही बड़े ही धूम धाम से मनाया जायेगा। आप सहपरिवार इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित है।

- आचार्य विक्रमदेव